पंजीयन संख्या-69904/98
डाक पंजीयन संख्या-एसएसपी/एल०डब्ल्यू०/एन०पी०/318/2020-2022

ओ३म्

श्रृण्वन्तुविश्वे अमृतस्य पुत्राः

आर्य्य लोक वार्ता

लखनऊ से प्रकाशित वैदिक विचारधारा का हिन्दी मासिक

वर्ष-२४, अंकः-२, अगस्त, सन्-२०२१, सं०-२०७७वि०, दयानंदाब्द १९७, सृष्टि सं० १,९६,०८,५३,१२१; मूल्य : एक प्रति ५.००रु., वार्षिक सहयोग १००.०० रुपये

भूलता नहीं ''जौहर''

महारानी के धधकते उद्‌बोधन से उबल पड़ा राजपूतों का खून!

बदला लेने को तत्क्षण हुए सन्नद्ध

और रच गया हृदयविदारक किन्तु गौरवशाली इतिहास

–श्रीश्यामनारायण पाण्डेय–

''फूँक दो उस राष्ट्र को जहाँ स्वाभिमान पर मर मिटनेवाले पुरुष नहीं, आग लगा दो उस देश में जहाँ पातिव्रत की रक्षा के लिए धधकती आग में अपने को झोंक देनेवाली स्त्रियाँ नहीं और पीस दो उस समाज को जो अपना अधिकार दूसरों को सौंप कर बँधे हुए कुत्ते की तरह याचक आँखों से उसकी ओर देखता है। मैं यह इसलिए कहती हूँ कि मानव हूँ, मानव जाति की विशेषताओं को जानती हूँ, मैं उसके अधिकारों से परिचित हूँ और मुझे उसके कर्त्तव्यों का ज्ञान है। मानव कुत्ता-बिल्ली नहीं है कि डण्डों की चोट खाकर भूल जाय, चूँ तक न करे, हलवाहे का बैल नहीं है कि बार-बार गलियाँ सुन कर चुप हो जाय, कानों पर जूँ तक न रेंगे और काबुक का कबूतर नहीं है कि साग बनाकर कोई निगल जाय और डकार तक न ले। मानव तूफान है, जिसके उठने पर समग्र सृष्टि हिल उठती है। मानव भूडोल है जिसके डोलने से ससागरा पृथ्वी काँप उठती है और मानव वज्र है जिसकी कठोर ध्वनि से आकाश का कोण-कोण दहल उठता है। मानव समुद्र पी गया, मानव ने सूर्य के रथ को रोक लिया और ब्रह्माण्ड को परिमित कर अपने मस्तिष्क में भर लिया। फिर भी वीरसू चित्तौड़ चुप है, चुप है शत्रु दल के वक्षस्थल चीरकर रक्त चूसनेवाली पुस्तैनी हिंसा-वृत्ति और चुप है वैरियों के शिर पर तलवार के साथ घूमनेवाली मृत्यु''--रानी ने दरबारियों पर एक तीक्ष्ण दृष्टि डाली; सारा दरबार स्तब्ध, नीरव और निश्चल।

वीर सती ने लम्बी साँस ली, भावनाओं के संघर्ष से वाणी गरज उठी--'तृणं शूरस्य जीवितम्' शूर जीवन को तृण समझता है। हथियारों के संघर्ष में, तलवारों की चकाचौंध में और लड़ते हुए वीरों के अव्यक्त कोलाहल में स्वाभिमान की रक्षा धीर करते हैं, अधीर नहीं; मृत्यु के खुले हुए मुख के सामने क्रुद्ध विषधरों के फणों को रौंदते हुए सपूत चलते हैं, कपूत नहीं; अपने पैरों की धमक से पृथ्वी को कँपाते हुए भाले-बरछे की तीव्र नोकों से सीने अड़ाकर रण-यात्रा पुरुष करते हैं, कापुरुष नहीं। राजपूतों का स्वाभिमान वैरियों के कटे हुए सीनों के ऊपर खेलता है और उनकी वीर वाणी तोपों की गड़गड़ाहट में गरजती है।

आखेट खेलते हुए रावल का शत्रु की हथकड़ियों में बँधकर कारागृह में बन्द रहना आश्चर्य नहीं है, आश्चर्य है उनकी मुक्ति, जो तुम्हारी तलवारों के साथ म्यानों में सो रही है और चुप है उनकी हुंकृति शोणित की गंगा बहा देने वाले तुम्हारे हथियारों की अतृप्ति में।

माँ-बहनों की यह अवज्ञा और तुम्हारी यह मौनसाधना? रावल के पैरों में बेड़ियों की झंकार और तुम्हारे नश्वर जीवन पर ममता का यह अत्याचार? अपमानित गढ़ के पाषाणों में भी एक हलचल और बापा रावल के दल के सामने दलदल? वैरियों का ताल ठोंककर ललकारना और मेवाड़-केसरियों का माँद में घुसकर झख मारना? धिक्कार है तुम्हारे बल को, धिक्कार है तुम्हारी रवानी को! बापा रावल के जवानों, धिक्कार है तुम्हारी जवानी को!

क्षत्राणियों के सीनों का दूध कलंकित करके राजपूतों का जीना मृत्यु से भी भयंकर और घृणित है, मेवाड़ के वातावरण में साँस लेनेवालों के लिए प्रतिपक्षी की क्रुद्ध आँखें देखने के पहले ही हलाहल पी लेना अच्छा है, आँधी और तूफान से लड़नेवाले मेवाड़ सिंह बिजली-सी कौंधनेवाली तलवारों में घुसकर यदि शत्रुओं के शिर काटकर पहाड़ न लगा दें तो उनके लिए एक चुल्लू पानी ही काफी है! बस और कुछ?''

रानी का रोम-रोम जल रहा था, आँखों से चिनगारियाँ निकल रही थीं और मुख के द्वार से दावानल के समान ज्वाला।

श्रीश्यामनारायण पाण्डेय

जिस समय महारानी रावल की मुक्ति में देर होने के कारण राजपूतों पर मुख से शब्दों के अंगार फेंक रही थीं ठीक उसी समय राजघराने के दो बालकों की त्योरियाँ चढ़ रही थीं, सीने तन रहे थे, भुजाएँ फड़क रही थीं और बार-बार उनके दाँये हाथ तलवारों की मूठों पर चले जा रहे थे।

रानी की ललकार जारी थी--''बोलो राणा के वंशधरो, बोलो रावल के वंशधरो रावल की मुक्ति के लिए यदि युद्ध से इन्कार करते हो तो बोलो, आँधी से अपनी तूफानी गति मिला दूँ? महिष मर्दिनी महाकाली-सी गरजूँ? और क्षण भर में ही वैरियों के कलेजे चीरकर रक्त चूस लूँ? बोलो, शेषनाग की तरह करवट लूँ? और पलक, भाँजते सारी पृथ्वी को चूर-चूरकर धूल में मिला दूँ। बोलो, महाप्रलयंकारी ज्वाला की तरह भभकूँ और बात की बात में सारी सृष्टि जलाकर भस्म कर दूँ? उत्साह न हो तो बोलो, किसी सम्राट से क्या, चराचर-सर्जन-कर्त्ता ब्रह्मा, देवाधिदेव विष्णु और गणों के सहित भूताधिपति रुद्र में भी चित्तौड़ की प्रबल गोद से मुझे छीन लेने की शक्ति नहीं है। लोहे की तीखी और तप्त सलाखों के बीच से होकर जलती हुई आग को कपड़े में बाँधकर ले जाना सरल नहीं है, त्रिपथगा के प्रवाह को रोककर उल्टी धारा बहा देना खिलवाड़ नहीं है। आकाश से ध्वनि, पृथ्वी से गन्ध और अग्नि से ज्वाला को दूर करना कठिन है, असम्भव है।''

'महारानी की जय' के निनाद से सारा दरबार काँप उठा। गोरा-बादल की उद्दीप्त तलवारें चमक उठीं और तत्क्षण गोरा की विनीत वाणी में साहस उमड़ने लगा--''धन्य है देवि! तू धन्य है! तू ह्रीं, श्री और कीर्ति की तरह पवित्र और शक्ति की तरह बलवती है। निश्चय, तू अपने पातिव्रत के तेज से शत्रुओं को भस्म कर सकती है, सिंहवाहिनी की तरह शत्रु-असुर को पैरों के नीचे दबाकर चूर कर सकती

(शेष पृष्ठ 3 पर)

विनय पीयूष

वर्षा : दो निवेदन

अभि क्रन्द स्तनयार्दयोदधिं भूमिं पर्जन्य पयसा समङ्ग्धि।
त्वया सृष्टं बहुलमैतु वर्षमाशारैषी कृशगुरेत्वस्तम्।।

उपप्रवद मण्डूकि वर्षमा वद तादुरि।
मध्ये ह्रदयस्य प्लवस्व विगृह्य चतुरः पदः।।

(अथर्ववेद 4/15/6,14)

एक

हे मेघ! गरजो,
भर दो दिशाओं-दिशाओं में
अपनी गड़गड़ाहट,
समुद्र को कर दो कम्पायमान,
भूमि पर जल ही जल कर दो!

हे मेघ!
तुम्हारा भेजा समृद्ध वर्षाजल
ऐसे डरपाता आये कि
दुबली-पतली गौवों वाला किसान
शरण चाहता अपने घर भाग जाए!

दो

री मेढ़की!
डुबकी न मार,
पास आ कर बोल,
वर्षा आ! वर्षा आ!

जितना तेरा शरीर,
उतना तेरा उदर,
अरे, चारो पैर फैला के
बीच पोखर तैर न!

काव्यानुवाद : अमृत खरे

सम्पादकीय

१८९७ — १९४७

आज जब मैं इन पंक्तियों को लिखने का उपक्रम करने लगा हूँ- ४ जुलाई है। यह विश्व में भारत की कीर्तिपताका फहराने वाले उस महान् संन्यासी की पुण्यतिथि है, जिसे स्वामी विवेकानन्द के नाम से जाना जाता है। आज के ही दिन सन् १९०२ में मात्र ३९ वर्ष की आयु में विवेकानन्द ने अंतिम साँसें ली थीं। जीवन के अंतिम वर्ष में उनके विचार-व्यवहार में क्रान्तिकारी परिवर्तन परिलक्षित होने लगा था और वे दरिद्र नारायण की पूजा को ईश्वरभक्ति मानने लगे थे तथा ढोंग-पाखण्ड, मठाधीशों, छूआछूत भेदभाव मानने वालों के प्रति उनके मन में गहरी वितृष्णा के भाव जाग्रत हो गये थे।

स्वामी विवेकानन्द के जीवन की गहन शोध-समीक्षा करने वाले वैज्ञानिक संन्यासी स्वामी सत्यप्रकाश सरस्वती के शब्दों में- 'जीवन के अंतिम वर्षों में विवेकानन्द में दयानन्द की आत्मा बोल रही थी। उनकी मृत्यु के समय की दशा भी स्वामी दयानन्द के अंतिम क्षणों से बहुत मिलती जुलती है।' स्वामी सत्यप्रकाश जी लिखते हैं कि '४ जुलाई १९०२ को शाम हुई, ७ बजे विवेकानन्द ने एक साधु को बुलाया, सभी खिड़कियाँ खोल देने को कहा। स्वयं चुपचाप फर्श पर लेट गये, ध्यानावस्थित। एक घण्टा और बीत गया, फिर एक गहरी सांस ली और फिर सब शान्त हो गया, शाश्वत शान्ति फैल गई। इस प्रकार इस महान् योद्धा का अन्त हुआ। अंतिम संस्कार-अगले दिन उनका शरीर चिता की ज्वाला में भस्म हो गया।' (ज्ञानसुधा, पृ.१४)

ध्यान देने की बात यह है कि विवेकानन्द का अंतिम संस्कार साधु-संन्यासियों की प्रचलित परम्परा के अनुसार- भू-समाधि या जलसमाधि देकर नहीं किया गया। वेद के आदेशानुसार-'भस्मातं शरीरम्' यह क्रान्तिकारी विचार विवेकानन्द को कहाँ से मिला? निश्चय ही स्वामी दयानन्द के जीवन की अंतिम यात्रा से यह संदेश उन्हें प्राप्त हुआ।

विवेकानन्द का जब कार्यक्षेत्र में पदार्पण हुआ, स्वामी दयानन्द की धवल कीर्ति से सारा देश महक रहा था। स्वामी दयानन्द का जन्म १८२४ में हुआ जबकि विवेकानन्द का जन्म १८६३ में। विवेकानन्द के अपने गुरु श्री रामकृष्ण परमहंस तो गृहस्थ थे, उनकी धर्मपत्नी 'शारदा' जी थीं, किन्तु उन्होंने स्वामी दयानन्द के जीवन को आदर्श मानकर संन्यास धारण किया और वेशभूषा वैसी ही अपनायी। इस संबन्ध में परमहंस जी के जीवन-वृत्त और दिनचर्या के लेखक रोनाल्ड रोम्यारोलाँ द्वारा लिखित विवरण ध्यान देने योग्य है। वे लिखते हैं-'एक दिन एक तेजस्वी संन्यासी रामकृष्ण परमहंस के दर्शनार्थ आया। उस समय नरेन्द्र अर्थात् विवेकानन्द भी वहीं पर मौजूद थे। संन्यासी के जाने के बाद नरेन्द्र ने अपने पूज्य गुरुवर से जानना चाहा कि यह तेजस्वी संन्यासी कौन था? परमहंस जी ने कहा- यह थे दयानन्द सरस्वती। इनके वक्षस्थल की लालिमा और ओजस्विता को देखकर ऐसा लगता है कि इन्होंने कुछ सिद्धि प्राप्त कर ली है। (ही हैज एचीव्ड ए लिटिल) इस पर नरेन्द्र ने जिज्ञासु भाव से अपने गुरु से पूछा- गुरुवर, इनके वक्षस्थल और मुखमण्डल पर यह चमक कैसी थी? परमहंस जी ने बताया- यह ब्रह्मचर्य की चमक थी। नरेन्द्र ने उसी क्षण यह निश्चय किया कि मैं भी ब्रह्मचर्य धारण करूँगा। दयानन्द सरस्वती के दर्शन और उनकी तेजस्विता से प्रभावित होकर विवेकानन्द ने स्वयं भी ब्रह्मचर्य व्रत धारण करने का निश्चय किया। संसार ने आगे चलकर उस विवेकानन्द को देखा जो गृह त्यागकर, गैरिक वस्त्र धारण कर, स्वामी दयानन्द जैसे वस्त्र धारण कर निर्भीकतापूर्वक विचरण करते और व्याख्यान करते हुए देखा।

रोम्यारोलाँ ने विवेकानन्द का जीवन चरित्र उनके जन्म से लेकर युवावस्था तक के वृत्तान्त को लिखने के बाद बीच में स्वामी दयानन्द सरस्वती का जीवन चरित्र १८ पृष्ठों में सविस्तार लिखा, तत्पश्चात् विवेकानन्द का जीवन चरित्र पूरा किया। रोम्यारोलाँ के अतिरिक्त अन्य जो जीवन चरित्र स्वामी विवेकानन्द के प्रकाशित हुए- उनमें भी यही क्रम पाया जाता है। यह प्रश्न उठना स्वाभाविक है कि विवेकानन्द के जीवन वृत्त के प्रसंग में उसी के अन्तर्गत स्वामी दयानन्द का विशद जीवन चरित्र लिखने की क्या आवश्यकता थी। उत्तर स्पष्ट है कि विवेकानन्द ने जो अपनी जीवन यात्रा का क्रम निर्धारित किया था और जिस मार्ग पर वे चल पड़े थे, उसपर स्वामी दयानन्द का इतना जबर्दस्त प्रभाव पड़ रहा था, जिसने रोम्यारोलाँ को महर्षि का जीवन चरित्र लिखने का बाध्य कर दिया था और इसपर स्वयं रामकृष्ण जी अथवा उनके अनुनायियों ने कभी आपत्ति नहीं की।

स्वामी दयानन्द सरस्वती का उद्घोष था-'राष्ट्रधर्म सर्वोपरि है।' उन्होंने कहा था-'भारत भारतीयों के लिए है।' स्वामी दयानन्द ने स्पष्ट रूप से सत्यार्थ प्रकाश में घोषणा की-'कितना भी अच्छा क्यों न हो- विदेशी राज्य स्वीकार्य नहीं है।' उन्होंने स्वतंत्र और शक्ति सम्पन्न राष्ट्र भारत की आवाज बुलंद की थी।

स्वामी विवेकानन्द ने भी स्वतंत्रता की इसी अवधारणा को आगे बढ़ाया, इसे वेगवती धारा का रूप प्रदान किया। सन् १८९७ में वे अपने एक महत्वपूर्ण भाषण में कहते हैं- 'भारतवासियों! अगले पचास वर्षों तक तुम्हें किसी भी अन्य देवी देवता की पूजा आराधना की जरूरत नहीं है। भारत माता ही तुम्हारी आराध्य देवी है। उसी की पूजा वंदना करो। तुम देखोगे आज से पचास वर्ष बाद भारत स्वतंत्र स्वाधीन राष्ट्र के रूप में उभरेगा।' स्वामी विवेकानन्द की यह उद्घोषणा सत्य सिद्ध हुई ओर १८९७ के ठीक पचास वर्ष बाद १५ अगस्त १९४७ को भारत आजाद हो गया और लाल किले पर तिरंगा फहराने लगा।

केयूर. शर्मा. शास्त्री

सत्यार्थ प्रकाश वार्ता-२०८

युग प्रवर्त्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती के अमरग्रंथ 'सत्यार्थ प्रकाश' के धारावाहिक स्वाध्याय के क्रम में दशम समुल्लास का अंश

जो मनुष्य देशदेशान्तर और द्वीप-द्वीपान्तर में जाने आने में शंका नहीं करते वे देशदेशान्तर के अनेकविध मनुष्यों के समागम, रीति भांति देखने, अपना राज्य और व्यवहार बढ़ाने से निर्भय शूरवीर होने लगते हैं और अच्छे व्यवहार का ग्रहण बुरी बातों के छोड़ने में तत्पर होके बड़े ऐश्वर्य को प्राप्त होते हैं। भला जो महाभ्रष्ट म्लेच्छकुलोत्पन्न वेश्या आदि के समागम से आचारभ्रष्ट धर्महीन नहीं होते किन्तु देशदेशान्तर के उत्तम पुरुषों के साथ समागम में छूत और दोष मानते हैं!!! यह केवल मूर्खता की बात नहीं तो और क्या है? हां, इतना कारण तो है कि जो लोग मांसभक्षण और मद्यपान करते हैं उनके शरीर और वीर्य्यादि धातु भी दुर्गन्धादि से दूषित होते हैं इसलिये उनके संग करने से आर्य्यों को भी ये कुलक्षण न लग जायें यह तो ठीक है। परन्तु जब इनसे व्यवहार और गुणग्रहण करने में कोई भी दोष वा पाप नहीं है किन्तु इनके मद्यपानादि दोषों को छोड़ गुणों को ग्रहण करें तो कुछ भी हानि नहीं। जब इनके स्पर्श और देखने से भी मूर्ख जन पाप गिनते हैं इसी से उनसे युद्ध कभी नहीं कर सकते क्योंकि युद्ध में उनको देखना और स्पर्श होना अवश्य है।

सज्जन लोगों को राग, द्वेष, अन्याय,

विदेश भ्रमण

मिथ्याभाषणादि दोषों को छोड़ निर्वैर प्रीति परोपकार सज्जनतादि का धारण करना उत्तम आचार है। और यह भी समझ लें कि धर्म हमारे आत्मा और कर्त्तव्य के साथ हैं। जब हम अच्छे काम करते हैं तो हमको देशदेशान्तर

और द्वीपद्वीपान्तर जाने में कुछ भी दोष नहीं लग सकता। दोष तो पाप के काम करने में लगते हैं।

हां, इतना अवश्य चाहिये कि वेदोक्त धर्म का निश्चय और पाखण्डमत का खण्डन करना अवश्य सीख लें। जिससे कोई हमको झूठा निश्चय न करा सके। क्या बिना देशदेशान्तर और द्वीप-द्वीपान्तर में राज्य वा व्यापार किये स्वदेश की उन्नति कभी हो सकती है? जब स्वदेश ही में स्वदेशी लोग व्यवहार करते और परदेशी स्वदेश में व्यवहार वा राज्य करें तो बिना दारिद्रय और दुःख के दूसरा कुछ भी नहीं हो सकता।

पाखण्डी लोग यह समझते हैं कि जो हम इनको विद्या पढ़ावेंगे और देश देशान्तर में जाने की आज्ञा देवेंगे तो ये बुद्धिमान् होकर हमारे पाखण्ड जाल में न फसने से हमारी प्रतिष्ठा और जीविका नष्ट हो जावेगी। इसीलिये भोजन छादन में बखेड़ा डालते हैं कि वे दूसरे देश में न जा सकें।

हां, इतना अवश्य चाहिये कि मद्यमांस का ग्रहण कदापि भूल कर भी न करें। क्या सब बुद्धिमानों ने यह निश्चय नहीं किया है कि जो राजपुरुषों में युद्ध समय में भी चौका लगा कर रसोई बना के खाना अवश्य पराजय का हेतु है? किन्तु क्षत्रिय लोगों का युद्ध में एक हाथ से रोटी खाते जल पीते जाना और दूसरे हाथ से शत्रुओं को घोड़े, हाथी, रथ पर चढ़ वा पैदल होके मारते जाना अपना विजय करना ही आचार और पराजित होना अनाचार है। इसी मूढ़ता से इन लोगों ने चौका लगाते-लगाते विरोध करते कराते सब स्वातन्त्र्य, आनन्द, धन, राज्य, विद्या और पुरुषार्थ पर चौका लगा कर हाथ पर हाथ धरे बैठे हैं और इच्छा करते हैं कि कुछ पदार्थ मिले तो पका कर खावें। परन्तु वैसा न होने पर जानो सब आर्यावर्त्त देश भर में चौका लगा के सर्वथा नष्ट कर दिया है। (क्रमशः)

वेदांजलि

उसी की स्तुति कर

❑पं.शिव कुमार शास्त्री
भू.पू.संसद सदस्य

प्रेष्ठं वो अतिथिं स्तुषे मित्रमिव प्रियम्।
अग्ने रथं न वेद्यम्।।

—साम. 5

शब्दार्थ—

[हे मनुष्य!] (**मित्रमिव प्रियम्**) मित्र के समान हितसाधक (**प्रेष्ठम्**) अतिप्रिय (**अतिथिम्**) निरन्तर व्यापक (**वेद्यम्**) जानने योग्य अथवा हृदयरूपी वेदी में ध्यान करने योग्य (**रथं न**) रथ के समान सबके आधार और वाहक=पहुँचानेवाले (**अग्नेः**) प्रकाशमान परमात्मा की (**स्तुषे**) तू स्तुति कर।

व्याख्या— मन्त्र के भाव को समझने के लिए उसे दो भागों में विभक्त किया जा सकता है-पहला भाग जिसे विधिवाक्य कह सकते हैं, मानव-जीवन का मुख्य लक्ष्य है-उस प्रभु की स्तुति के गीत गाना; मन्त्र के शेष भाग में छह विशेषणों के द्वारा उस प्रभु के स्वरूप का दिग्दर्शन कराया गया है।

स्तुषे का अर्थ 'तू स्तुति कर' इतना ही है, किन्तु इसके गहरे भाव को प्रकट करने के लिए इसका अर्थ 'स्तुति के गीत गा' किया गया है। हेतु यह है कि साम है ही गान का विषय। साम का लक्षण शास्त्रकारों ने किया '**गीतिषु समाख्या**'-ऋचाएँ ही भक्तों के भावावेश की स्वरलहरी में जब फूटकर बाहर प्रकट होती हैं, तो वे साम बन जाती हैं। उपासना और संगीत का गहरा सम्बन्ध है, अर्थात् जो मनोदशा एक गायक की संगीत को गाने के समय होती है, ठीक वही स्थिति भक्त की भी उपासना में प्रभु-स्मरण के समय होनी चाहिए। उपासक की मनोदशा का अच्छा चित्र खींचा है गोस्वामी तुलसीदास ने-

हिय फाटउ फूटउ नयन, जरउ सो तन केहि काम।
द्रवै स्रवै पुलकै नहीं, तुलसी सुमिरत नाम।।

प्रभु के अगणित उपकारों को स्मरण कर कृतज्ञ मन जब उसका धन्यवाद देने के लिए झुकता है, तभी वस्तुतः स्तुति और भक्ति होती है। ऋषि दयानन्द ने भी सत्यार्थ प्रकाश में यही कहा कि प्रभु-प्रेम में गद्गद होकर भगवान् का भजन करना चाहिए।

मन्त्र में दूसरी बात है-'मित्रमिव प्रियम्' =वह मित्र के समान हित-साधक है। संस्कृत की 'ञिमिदा स्नेहने' धातु का 'मित्' और 'त्रैङ् रक्षणे' धातु का 'त्रै' इस प्रकार दोनों के योग से 'मित्र' शब्द बना। वह स्नेह जो अपना और अपने सम्पर्क में आने वाले (दोनों) का त्राण-उद्धार करने वाला हो।

मन्त्र में प्रभु के विशेषणों में दूसरा है '**प्रेष्ठम्**'। वह सबसे अधिक प्रेम करने योग्य है। संस्कृत व्याकरण में तमप् और इष्ठन् प्रत्यय अतिशय के अर्थ में आते हैं, अर्थात् जहाँ पराकाष्ठा हो। अंग्रेजी के भी बेस्ट, बिगेस्ट और ग्रेटेस्ट आदि शब्दों में अतिशय के अर्थ द्योतक वही इष्ठन् प्रत्यय है। इस अतिशय प्रेम का पात्र वह प्रभु ही है।

तीसरा विशेषण है-'**अतिथिम्**'-वह सर्व व्यापक है। जिसकी सीमा नियत हो उसे तिथि कहते हैं, चाहे वह सीमा स्थान की हो अथवा समय की; और जिसकी देश और काल की कोई सीमा न हो, अर्थात् जो सब काल और सब स्थानों पर हो उसे कहेंगे-'अतिथि'। इस प्रकार अतिथि शब्द का अर्थ हुआ सर्वव्यापक।

चतुर्थ विशेषण है-'**वेद्यम्**'। व्युत्पत्ति के आधार पर 'वेद्यम्' शब्द का एक अर्थ है-'**वेत्तुम् योग्यम्**'-जानने के योग्य, और दूसरा अर्थ है-'**वेद्यां भवं वेद्यम्**'-उसका ज्ञान हृदयरूपी वेदी में ही हो सकता है। विद्या वही है जो दुःख से छुटकारा दिला दे। अतः मन्त्र में कहा-'**वेद्यम्**'-वही जानने योग्य है।

अब पाँचवाँ विशेषण है-'**रथं न**'। यहाँ 'न' उपमार्थक है। जैसे सवार का आधार रथ होता है, उसी प्रकार वह परमात्मा सारे जगत् का आधार है, तथा जिस प्रकार गति रथ में होती है, सवार में नहीं, उसी प्रकार सारा जड़-जगत् गतिमय है। सूर्य, चन्द्र, पृथिवी आदि समस्त ग्रह और नक्षत्र स्वयं नियमित गति से नहीं घूम सकते। इस समस्त चक्र को घुमानेवाला वही है। अतएव वेद में अन्यत्र भी कहा-'**स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमाम्**' वही पृथिवी आदि समस्त लोकों का धारण करनेवाला है।

अन्तिम विशेषण है-'**अग्नेः**'-उस प्रकाशस्वरूप की स्तुति कर। संसार में जितना भी भौतिक और आध्यात्मिक ज्ञान का प्रकाश है, यह सब उसी की कृपा से हमें प्राप्त हुआ है। हमारी आँखों की सहायता के लिए भगवान् ने सूर्य को बनाया। यदि सूर्य न होता तो हम आँखें होते हुए भी अन्धे थे। रात्रि के अन्धकार में अग्नि-तत्त्व की सहायता के बिना हमें कुछ भी न दीखता।

जैसे आँखों की सहायता के लिए सूर्य दिया, उसी प्रकार भलाई और बुराई की पहचान की योग्यता उत्पन्न करने के लिए सृष्टि के आरम्भ में ही अपना ज्ञान 'वेद' दिया। यदि उसने अपने ज्ञान का प्रसाद न बाँटा होता तो मनुष्य की हालत पशुओं से भी बुरी होती। इसलिए हे मनुष्य! तू उसी की स्तुति कर।

('श्रुति सौरभ' से साभार)

दयानन्द चरितामृतम्

-डॉ.गणेश दत्त शर्मा-

(द्वितीयः सर्गः)

छन्द ४-६

निर्विकारं सदानन्दं,
ज्ञात्वा शम्भु जगत्पतिम्।
हृदिस्थं श्रद्धया ध्यायन्,
कृता पूजा हि सात्विकी।।

क्योंकि-निर्विकार, सदानन्द जगत् के स्वामी और सभी के हृदय में स्थित भगवान् शम्भू (शिव) का श्रद्धापूर्वक ध्यान करते हुए की गई पूजा ही सात्विक होती है।

मूर्खतायाः पराकाष्ठा,
विश्वात्ममूर्तिकल्पना।
सर्वव्यापी चिदात्मा यो,
मूर्तिस्तस्य कथं भवेत्।।

विश्वात्मरूप भगवान् की मूर्ति की कल्पना मूर्खता की पराकाष्ठा है। जो सर्वव्यापक तथा चिद्रूप है,--उसकी मूर्ति कैसे हो सकती है?

भूतेशपिण्डिकामूषो,
धन्यो ह्यजनयच्च यः।
रात्रौ भाविदयानन्द-
चित्ते क्रान्तिं विलक्षणाम्।।

समस्त प्राणियों के स्वामी भगवान् शिव की पिण्डी पर आया वह चूहा धन्य है जिसने शिवरात्रि के अवसर पर भावी दयानन्द (मूलशंकर) के चित्त में विलक्षण क्रान्ति को जन्म दिया।

('दयानन्द चरितामृतम्' से साभार, क्रमशः)

-साहिबाबाद, गाजियाबाद-२०१००५

(पृष्ठ 1 का शेष....)

महारानी के .....

है और अपनी वरद भुजाओं के बल से रावल रतन को मुक्त कर सकती है, इसमें संदेह नहीं, किन्तु गोरा की तलवार की कब परीक्षा होगी? माँ! गोरा का अदम्य उत्साह और दुर्दमनीय साहस किस दिन का आयेगा? माँ! तेरे गोरा के गर्जन और बादल के तर्जन से वैरी दल पर बिजली कब गिरेगी? माँ! गोरा बादल तेरे सामने बाल, किन्तु शत्रुओं के लिए काल है। माँ! तू आज्ञा दे गोरा बादल की दो ही तलवारें बैरियों को यमपुर पहुँचाने के लिए काफी हैं। देवि, तू इशारा कर हम दुश्मनों के ऊपर मौत की तरह दौड़ें, मेवाड़ के अपमान का बदला खून की नदी बहाकर लें, हम विद्युत्गति से निकलें और खिलजी के पड़ावों में आग लगा दें। देवि, आज्ञा दे, तुझे हमारी शपथ है; देवि इशारा कर तुझे मेवाड़ की शपथ है; देवि क्षमा कर तुझे रावल की शपथ है।'' --बादल ने गोरा के कहे हुए शब्दों की हुँकारी भरी और दोनों वीर बालक हाथ जोड़कर रानी के सामने खड़े हो गये--अपलक, अचल और दुर्निवार्य।

अगणित तलवारें के भयंकर प्रकाश से दरबार प्रकाशित हो गया, वीर सलामी के बाद सहस्र मुखों से एक साथ निकल पड़ा--''हम राजलक्ष्मी के पातिव्रत की रक्षा के लिए मर मिटेंगे, हम अपने गौरव के लिए समरयज्ञ में स्वाहा हो जायेंगे और रावल के लिए प्राण दे देंगे। चित्तौड़ का वक्षस्थल अभिमान से तन गया और वीरों की दर्पपूर्ण शब्दावली से आकाश का स्तर स्तर गूँज उठा।

रानी भभर उठी, बार-बार रोमांच होने लगा, तमतमाये मुख पर प्रसन्नता प्रस्फुटित हो गयी और अन्तर की मौन कल्पनाएँ मुखरित हो उठीं--

''वीरों, तुम्हारी प्रतिज्ञा मेवाड़-भूमि के अनुरूप ही है, किन्तु 'शठे शाठ्यं समाचरेत' वाली कहावत कहीं व्यर्थ ने पड़ जाय इसलिए तुम वैरी को सूचित कर दो कि 'आपके आज्ञानुसार हमारी महारानी अपने पति को मुक्त करने के लिए सात सौ सहेलियों के साथ कल प्रातःकाल पड़ाव पर पहुँच जायेंगी।'' और इधर मखमली उहारों के साथ रात भर में सात सौ डोले तैयार कर दिये जायँ। एक एक डोले के भीतर सशस्त्र एक एक राजपूत और प्रत्येक डोले के चारों कहारों के वेष में मेवाड़ के सपूत, जो वैरियों के लिए यमदूत से भी भयंकर हों।''

'महारानी की जय' के निनाद से एक बार फिर दरबार काँप उठा।

('जौहर' महाकाव्य के 'अग्निकण' से)

होता सदस्य परिचय-64

आदर्श अध्यापक, वैदिक प्रवक्ता

पं.वेद पाल शास्त्री

मवाना, मेरठ

मेरठ जनपद के ग्राम शाफियाबाद लोटी के एक किसान परिवार में दिनांक ५ जुलाई १६५५ में श्री वेद पाल शास्त्री का जन्म हुआ। आपके पिता श्री कर्म सिंह ने भारतीय सेना को अपनी सेवाएँ दीं। आपकी माता जी श्रीमती करतो देवी एक सच्ची ईश्वरभक्त व राष्ट्रभक्त महिला थीं।

आपकी प्रारम्भिक शिक्षा आपके पैत्रिक ग्राम में हुई तथा गुरुकुल महाविद्यालय ततारपुर (मेरठ) से आपने उत्तर मध्यमा परीक्षा उत्तीर्ण की। तत्पश्चात् गुरुकुल महाविद्यालय सिरसागंज मैनपुरी से शास्त्री तथा गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर से विद्याभास्कर की उपाधि अर्जित की। आपने शिक्षाशास्त्री की परीक्षा लाल बहादुर शास्त्री केन्द्रीय विद्यालय से उत्तीर्ण की। आपने संस्कृत में एम.ए. धर्मसमाज महाविद्यालय अलीगढ़ से किया तथा अन्य उच्च शिक्षाएँ प्राप्त करते रहे।

आपने २१ जनवरी १६७८ से ३१ मार्च २०१८ तक नवजीवन किसान इंटर कालेज मवाना (मेरठ) में प्रवक्ता पद पर कार्य किया। मैं श्री वेदपाल शास्त्री से गत ३५-३८ वर्षों से परिचित रहा हूँ, मवाना निवासी होने के कारण। श्री शास्त्री जी स्वाध्याय प्रेमी हैं और आर्य समजा मवाना के पुरोहित पद पर भी कार्य करते आ रहे हैं। आप अपनी प्रगति के लिए व गुरुकुलीय शिक्षा का पूर्ण श्रेय अपने अग्रज श्री भागसिंह आर्य को देते हैं जिन्होंने आर्य समाज छतरपुर, दिल्ली में अनेक वर्षों तक मंत्री पद को सुशोभित किया। वे आज भी आपके प्रेरणास्रोत हैं।

आप आर्य लोक वार्ता के नियमित पाठक हैं। आर्य लोक वार्ता के प्रधान सम्पादक डॉ.वेद प्रकाश आर्य ने अपने मवाना-मेरठ भ्रमण के दौरान शास्त्री जी द्वारा संचालित यज्ञ के कार्यक्रम को देखा और सराहा। मेरठ जनपद मवाना तहसील के अनेकों ग्रामों, दिल्ली में व आर्य समाज वानप्रस्थाश्रम हस्तिनापुर में यज्ञ श्री वेदपाल शास्त्री के आचार्यत्व में होते रहते हैं। वेद प्रचार करना ही आपका मुख्य उद्देश्य है। मैं श्री वेदपाल शास्त्री जी के उज्ज्वल भविष्य की कामना करता हूँ।

यहाँ शास्त्री जी की वे रचनाएँ उद्धृत हैं, जिनके सुललित गायन से वे यज्ञ और सत्संग के कार्यक्रमों को रसमय बना देते हैं:

हे विभो आनन्द सिन्धो! मे च मेधा दीयताम्।
यच्च दुरितं दीन बन्धो! तच्च दूरं नीयताम्।।
चंचलानि हीन्द्रियाणि मानसं मे पूयताम्।
शरणं याचे तावकीनं सेवाकोऽनुगृह्यताम्।।
त्वयि च वीर्यं विद्यते यत् तच्च मयि निधीयताम्।
या च दुर्गुणदीनता मयि सा तु शीघ्रं क्षीयताम्।।
शौर्यं धैर्यं तैजसं च भारते च क्रीयताम्।।
हे दयामय! अयि अनादे! प्रार्थना मम श्रूयताम्।।

हे विधातः ज्ञानदातः! मे च मेधा दीयताम्।
सौम्यता सुशीलता च हृदये मे धीयताम्।।
वेद-विद्या लुप्ता जगति, प्रायशः परमेश्वरः।
अन्धता जगति तता, या सा तु दूरं नीयताम्।।
पण्डिताः खलु खण्डितास्तु, भारतादस्मान्ननु।
सर्व विद्या मण्डिताः सुः पण्डिता विधीयताम्।।
अभ्यर्थना वा वन्दना वा, हृद्देशोन्निर्गतो।
बालकानां हे पितः! नतमौलीनां स्वीक्रियताम्।।

भावार्थ- हे सर्वव्यापक आनन्द सिन्धो! मुझे उत्तम बुद्धि दीजिए। हे दीनबन्धो! मेरे में जो अवगुण हैं उन्हें दूर कीजिए। मेरी चंचल इन्द्रियों और मन को पवित्र कीजिए। हे शरणागत को शरण देने वाले प्रभो! मैं आपकी शरण आश्रय की याचना करता हूँ, अपनी शरण में लेकर मुझ सेवक को अनुगहीत कीजिए। हे सर्वशक्तिमान्! आप में जो शक्ति है वह मुझमें धारण कराइये और जो दुर्गुण दीनता निर्बलता मुझमें हैं उसे शीघ्र दूर कीजिए। के कृपानिधान! हमार भारत के सभी आबाल वृद्ध स्त्री-पुरुषों को शूरवीर और तेजस्वी बनाइये। हे अनादे दयामय! मेरी यह प्रार्थना सुनिये और इस याचना को शीघ्र पूर्ण कीजिए।

प्रस्तुति : पाल प्रवीण

योगाश्रम, अलीगंज, लखनऊ

सत्संग

जिज्ञासा और समाधान

जिज्ञासा :

''हम कैसे पहचान करें कि क्या सत्य है और क्या असत्य। कृपया उन कसौटियों से अवगत करायें जिससे सत्य-असत्य की परीक्षा की जा सके?

-प्रत्यूषरत्न पाण्डेय, प्रधान, आर्य समाज, लाजपतनगर, चौक, लखनऊ

समाधान :

सत्य और असत्य की पहचान हेतु ही महर्षि दयानन्द ने 'सत्यार्थ प्रकाश' की रचना की है- जैसा उसके सुंदर सार्थक नाम से ही स्पष्ट है। 'सत्यार्थ प्रकाश' के अतिरिक्त 'व्यवहारभानु' एवं 'स्वमंतव्यामंतव्यप्रकाश' जैसे ग्रंथों में भी महर्षि के शब्दों पर यथेष्ट ध्यान न देने से ही भ्रांतियाँ उत्पन्न होती हैं। हमें यह ध्यान रखना चाहिए कि महर्षि की भाषा और वाणी 'आप्त वाणी' है। वे आप्त पुरुष थे। आप्त पुरुषों की वाणी में एक शब्द का भी फेर बदल करने से वास्तविकता तक नहीं पहुँचा जा सकता है।

'स्वमंतव्यामंतव्यप्रकाश' में महर्षि लिखते हैं- 'परीक्षा पाँच प्रकार की है। इसमें से प्रथम तो ईश्वर के गुण कर्म स्वभाव और वेद विद्या, दूसरी प्रत्यक्ष आदि आठ प्रमाण, तीसरी सृष्टि क्रम, चौथी आप्तों का व्यवहार और पांचवीं अपने आत्मा की पवित्रता विधा। इन पाँच परीक्षाओं से सत्यासत्य का निर्णय करके सत्य का ग्रहण और असत्य का परित्याग करना चाहिए।'

यहाँ यह स्पष्ट करना आवश्यक है कि सत्य और असत्य जानने की कसौटियाँ पाँच हैं, न कि तीन- जैसा कई विद्वान मान बैठे हैं। जो समझ में न आये उसे समझने का प्रयास करना चाहिए, न कि मनमाने ढंग से अपनी मान्यता प्रचलित करने की कोशिश करनी चाहिए।

संकेत-

(1) प्रथम कसौटी- वेदविद्या की बात महर्षि ने की है जिसका स्पष्ट मतलब है कि सत्य और असत्य की पहचान करने के लिए सर्वप्रथम यह जानने का प्रयास करना है कि जिस विषय की सच्चाई का हम पता लगाना चाहते हैं वह वेदानुकूल है अथवा नहीं। जो वेदानुकूल है, वह ग्राह्य है और जो वेद के विपरीत है वह अग्राह्य है। यदि हम ध्यानपूर्वक देखें तो महर्षि ने इस कसौटी पर कसकर सारे विषयों को परखा। सम्पूर्ण 'सत्यार्थ प्रकाश' में इस कसौटी को ध्यान में रखा गया है। यहाँ तक कि रामचरितमानस में भी यदि कोई बात वेदानुकूल है तो महर्षि ने उसका समर्थन किया है। पूना-प्रवचन (उपदेश मंजरी) के एक व्याख्यान में महर्षि ने रामचरितमानस की एक अर्द्धाली का हवाला दिया है, वह अर्द्धाली है-

कर्म प्रधान विस्व रचि राखा।
जो जस करै सो तब फल चाखा।।

यह कसौटी हमें वेदों के स्वाध्याय की ओर प्रवृत्त करती है क्योंकि ईश्वर के गुण कर्म स्वभाव का भी पता वेदविद्या से प्राप्त होता है।

(2) द्वितीय कसौटी- प्रत्यक्षादि आठ प्रमाण- लोग प्रायः प्रत्यक्ष को ही प्रमाण मान लेते हैं किन्तु कभी कभी प्रत्यक्ष बात भी सत्य नहीं होती है। जादूगर आपके समक्ष ही रूपये आपके कान, नाक से पैदा कर रहा है, आप प्रत्यक्ष देख रहे हैं, किन्तु वह असत्य है। इसी तरह कहीं गणेश प्रतिमा आपको दूध पीती दीख रही है किन्तु वह भी सत्य नहीं है। अतः महर्षि ने प्रत्यक्षादि आठ प्रमाण जो दर्शन शास्त्र से मान्यता प्राप्त हैं- उनकी चर्चा की है।

(3) सृष्टिक्रम का अभिप्राय है- कार्य कारण का सिद्धान्त। सम्पूर्ण सृष्टि कार्य कारण के सिद्धान्त के अनुसार संचालित है। कोई कार्य अकारण नहीं हो सकता है- इस कसौटी को सर्वत्र लागू करना चाहिए।

(4) आप्तों का व्यवहार- प्रसिद्ध सूक्ति- 'महाजनो येन गता सपंथा' इसी पर आधारित है। आप्त पुरुषों की वाणी मिथ्या नहीं हो सकती है-'मृषा न होइ देवऋषि वाणी' किन्तु हर साधु संत आप्त नहीं हो सकता। 'आप्त' की परिभाषा हेतु 'स्वमंतव्यामन्तव्यप्रकाश' का अवलोकन करना चाहिए।

(5) पाँचवीं कसौटी- आत्मा की पवित्रता विधा को माना गया है। मनुष्य का आत्मा सदैव पवित्र और यथार्थ का बोध कराता है। किसी भी विषय की सत्यता जानने के लिए आत्मा से पूछना चाहिए। आत्मा सत्यासत्य का बोध करा देता है किन्तु मनुष्य अपने निजी स्वार्थ वश आत्मा की आवाज दबा देता है या आत्मा की आवाज सुनता ही नहीं।

महर्षि दयानन्द ने इन बिन्दुओं पर सविस्तार विचार किया है किन्तु विद्वान् प्रायः महर्षि की बात की भी अनदेखी कर जाते हैं और स्वकल्पित बातें महर्षि के सिद्धान्तों पर आरोपित कर देते हैं।

-सम्पादक

शुभाकांक्षा

'आर्य लोक वार्ता' का जुलाई अंक

भावात्मक और हृदयस्पर्शी है। विशेषकर स्व.सरला आर्य जी के जीवन की बहुत सी बातें- जिन्हें शायद लोग न जानते हों, डॉ.वेद प्रकाश आर्य ने उद्घाटित की हैं। क्योंकि अपनी पत्नी के विषय में सच्ची जानकारी पति के पास ही होती है जिसे वह उपयुक्त समय पर व्यक्त करता है। कदाचित् सरला आर्य का स्वर्गारोहण से अधिक उपयुक्त समय और क्या हो सकता था। तथापि परिवार के सदस्यों के साथ सरला जी का एक चित्र का न होना इस अंक की बड़ी कमी है, जो खटकती है। मैंने सम्पादक का ध्यान इस कमी की ओर आकर्षित किया है।

[आनन्द बाबू की इच्छानुसार त्रुटि के निराकरण हेतु कृपया पृष्ठ ८ देखें]

'सरला आर्य - जीवन, उपलब्धि और संदेश' शीर्षक पृष्ठ ८ पर प्रकाशित डॉ. वेद प्रकाश आर्य का यह लेख उनके वैदिक विचारों, लोकोपकारी जीवन और क्रान्तिधर्मिता का सुंदर उदाहरण है। उपदेश मात्र नहीं, उपदेश को व्यवहार में बदलने का जो कार्य डॉ.आर्य ने किया है, और आज भी कर रहे हैं, वह स्तुत्य है। अतः ऐसे सद्विचारों को प्रोत्साहित करना और उन्हें आगे बढ़ाने हेतु सहयोग देना प्रत्येक आर्य का प्रधान कर्तव्य होना चाहिए।

-आनन्द कुमार आर्य
आर्य समाज, टाण्डा, अम्बेडकरनगर, उ.प्र.

***

'आर्य लोक वार्ता' के प्रधान सम्पादक

डॉ.वेद प्रकाश आर्य की कर्मठ सहयोगी श्रीमती सरला आर्य का संसार से चले जाना अत्यंत कष्टकारी है। जब भी मैं सम्पादक जी के आवास पर गया उन्हें कार्य में व्यस्त ही पाया। प्रायः वे 'आर्य लोक वार्ता' के छपने के बाद उनकी प्रतियों को विधिपूर्वक मोड़ना, उन पर सही ढंग से पते चिपकाना इत्यादि कार्य स्वयं की देखरेख में ही करती थीं। अन्य लोग इतनी तत्परता से यह कार्य नहीं कर पाते थे।

जिन दिनों डॉ.आर्य जी आजमगढ़ डी.ए.वी.कालेज में कार्यरत थे, मेरी माता जी आजमगढ़ महिला आर्य समाज की सक्रिय सदस्य थीं। वे उनके साथ आर्य समाज के उत्सवों व कार्यक्रमों में बराबर भागीदार रहती थीं। परमेश्वर से मेरी यही प्रार्थना है कि वह स्व.सरला जी की आत्मा को शान्ति एवं सद्गति प्रदान करे तथा परिवार के सदस्यों को धैर्य।

-शिशर कुमार श्रीवास्तव
सी-352/2, इन्दिरा नगर, लखनऊ

***

आर्य लोक वार्ता का जुलाई अंक एक एक शब्द पढ़ गया। एक बार जब शुरू किया तो अंत तक पढ़ता ही गया क्योंकि इस अंक का विषय भी अत्यंत मार्मिक था। स्व.सरला आर्य जी के स्नेह की छाँव प्रारम्भ से ही मिलती रहती थी। मैं उन दिनों को याद करके विह्वल हो उठता हूँ, जब आर्य समाज हरिनगर-नारायणनगर की स्थापना हुई थी। आर्य समाज की स्थापना से पूर्व मासिक/पाक्षिक सत्संग चलते रहते थे, जिसमें माइक इत्यादि की पूर्ण व्यवस्था रहती थी। इन आयोजनों का श्रेय सरला जी

को ही जाता है। प्रारंभ में उन्हें आर्य समाज का प्रधान भी बनाया गया था। कुल मिलाकर १९८० से १९९० के बीच तीन बड़े उत्सव आयोजित हुए थे, जिनमें उनकी प्रबंध क्षमता तथा कुशलता देखते ही बनती थी। मैं उनके हर आयोजन में शरीक हुआ था। वे मातृस्वरूपा देवी स्वरूपा थीं, ईश्वर ने उनको असमय ही हमसे विलग कर दिया। ईश्वर की व्यवस्था के सामने नत मस्तक होने को हम सभी बाध्य हैं।

इस अंक का सम्पादन और लेखन तथा रचनाओं का चयन इतना सुंदर और सटीक है, कि उसकी प्रशंसा हेतु मेरे पास शब्द नहीं हैं। खास कर 'सरला आर्य-जीवन, उपलब्धि और संदेश' पृष्ठ ८ पर प्रकाशित लेख तो बड़ा ही ज्ञानवर्द्धक, रोचक तथा भावपूर्ण है। आपने सरला जी के व्यक्तित्व के अनेक पक्ष उसमें उजागर किये हैं, जो आप ही कर सकते थे। सरला जी के अनेक कार्यों का विवरण आपने दिया है तथापि 'कन्या उपनयन महोत्सव' का विवरण छूट गया है। यह ऐतिहासिक कार्य भी उनकी झोली में ही जाता है क्योंकि 'कन्या उपनयन महोत्सव' मे महिलाओं की ही मुख्य और सक्रिय भूमिका थी। अच्छा होगा यदि एक बार आप फिर से उस कार्यक्रम के कुछ चित्र प्रकाशित कर दें।

मैं आजकल अस्वस्थ रहता हूँ इसलिए आप तक पहुँच नहीं पाया। आर्य लोक वार्ता के माध्यम से मैं अपनी श्रद्धांजलि और संवेदनाएँ व्यक्त कर रहा हूँ। मुझे संतोष इस बात का है कि मेरे प्रिय सुहृद सर्वमित्र जी आपके साथ प्रत्येक स्थिति में खड़े रहते हैं। ईश्वर उन्हें सहयोग की यह शक्ति प्रदान करता रहे। यथाशीघ्र मैं आपके दर्शनार्थ लखनऊ आपके आवास पर पहुँचने का प्रयास करूँगा। इसी अंक में 'योगी की परिकल्पना', 'विनय पीयूष' के साथ ही 'काव्यायन' स्तम्भ की मार्मिकता हृदय पर गहरा असर डालती है। आर्य लोक वार्ता के प्रति मेरी शुभकामनाएँ। परमात्मा आपको वह शक्ति दे कि आप अपनी जीवन सहचरी सरला जी के अभाव में भी आर्य शक्ति को जागृत करने का कार्य करते रहें।

-आचार्य सत्यप्रकाश आर्य
आवास विकास कालोनी, बाराबंकी, उ.प्र.

***

जीवात्मा जीर्ण देह में नहीं रहा करता।

नयी काया में प्रवेश करना एक काल के बाद अवश्यम्भावी है। आर्य जगत में नारी शक्तिस्रोत के रूप में जानी जाने वाली सुविख्यात आर्य उपदेशक मनीषी डॉ. वेद प्रकाश आर्य की धर्मपत्नी सरला आर्या एक लम्बी बीमारी के बाद चल बसीं। यह अपूर्णनीय क्षति आर्य लोक को स्तब्ध कर गयी। सरला जी निरंतर सक्रिय आर्य नेत्री थीं। उनकी प्रेरणा से अनेक पौराणिक स्त्रियाँ आर्य जगत से जुड़ीं। लोगों का उपकार करना, समाज सेवा करना, यज्ञ, उत्सव आदि में बढ़ चढ़ कर भाग लेना उत्साह और उल्लास के साथ सम्मिलित होना आप की विशेषताएँ थीं। आर्य समाज टाण्डा के एक वार्षिक उत्सव में भाग लेने के दौरान कूल्हे का गोलक टूट जाने से लगातार अस्वस्थ चलने के बाद भी उत्साह में और आवेग में कोई कमी नहीं आने दी। निरंतर सक्रियता एवं शैय्या पर भी डॉ.वेद प्रकाश जी के लिए शक्तिस्रोत का कार्य करती रहीं। एक अतिसाधारण एवं निर्धन पृष्ठभूमि की उस नारी के अदम्य साहस एवं आस्था का परिणाम जार्य जगत के प्रसिद्ध उपदेशक आचार्य डॉ.वेद प्रकाश आर्य आपके समक्ष हैं। ऐसी सरल सरला आर्या को मेरा कोटि कोटि नमन है।

-श्रीशरत्न पाण्डेय
217, सेक्टर-डी, बसंतकुंज, लखनऊ-226024

***

आर्य लोक वार्ता के दो अंक- मार्च व

जुलाई २०२१ एक साथ प्राप्त हुए। ये दोनों ही अंक हृदय को पीड़ादायी दिखे। कई स्नेही विभूतियाँ हमसे बिछुड़ गईं। सम्पादक-पत्नी श्रीमती सरला आर्य की सूचना तो पहले ही प्राप्त हो चुकी थी और मेरे हमदर सोरठे जो 'कालचक्र विकराल' शीर्षक से छपे हैं वह यही संकेत दे रहे हैं। हमारे दूसरे परम हितैषी डॉ.मोहन लाल अग्रवाल जी भी अचानक हमें छोड़कर चल बसे, उनके निधन की भी सूचना पहले मिल चुकी थी पर आर्य लोक वार्ता का अंक मिलते ही उनकी स्मृति भी ताजा हो गयी। उन्होंने १०.०१.२०२१ को मेरी दो पुस्तकों 'ऐसा वर दो' और 'झलक' का लोकार्पण अपने कार्यक्रम में किया था साथ ही सम्मान भी, और २६.०२.२१ को वे संसार छोड़कर चले गए। डॉ.राजेन्द्र साहू, 'वीरजी' की पत्नी, स्वामी सत्यपति महाराज, चन्द्रिका दास, मोहिन्दर भण्डारी, राजीव कुमार, सत्यव्रत कटियार इत्यादि की कितनी लम्बी सूची है दिवंगतों की, मैं सभी को नमन करते हुए उनकी आत्मा की शान्ति के लिए परमेश्वर से कामना करता हूँ। जुलाई अंक को यदि हम शोक संवेदना (विरह) अंक की संज्ञा दें तो अनुपयुक्त न होगा।

काव्यायन की समस्त रचनाएँ, कालजयी रचना 'विकल रागिनी' जो महाकवि जयशंकर प्रसाद जी के 'आँसू' से उद्धृत है, सहित, सभी जीवन में आने वाले वियोग को परिभाषित करती हैं। दोनों ही अंक के लेख, समीक्षा व अन्य स्तम्भ स्तरीय हैं।

-दयानन्द जड़िया 'अबोध'
370/27, हाता नूरबेग, सआदतगंज, लखनऊ

***

'आर्य लोक वार्ता' जुलाई अंक, २०२१ आद्योपान्त पढ़ गया। मुखपृष्ठ पर अंकित पं.शिवकुमार शास्त्री का लेख 'श्रीराम ने अपने उच्च चरित्र से पुनः स्थापित किया था आदर्श वैदिक समाज' अतिशय प्रेरणादायक और नवीन चिन्तन से उद्भासित है। निःसन्देह किसी समाज का निर्माण बिना उदात्त आचरण के सम्भव नहीं। उदारमना महापुरुषों के श्रेष्ठ आचरण का प्रभाव सदा सर्वदा सुलभ कल्याणकर सिद्ध होता है। वैदिक मंत्रों के कुशल हिन्दी रूपान्तरकार श्री अमृत खरे द्वारा किये गये दोनों मंत्रों का सुबोध-सुस्पष्ट भावमय रूपान्तरण सर्वथा स्वागत योग्य एवं श्लाघनीय है। पूर्व अंकों की भाँति इसका भी सम्पादकीय अपने नूतन विचारों से हमें आकृष्ट करने में समर्थ है। योगी का शिव-संकल्प सम्पूर्ण मानवता का मंगल करता है। सम्पादक ने बड़े कौशल से इसे उत्तर

प्रदेश के वर्तमान माननीय मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ में साकार देखा और दिखलाया है। सरयू और श्रीअवध की महिमा की श्रीवृद्धि की सम्भावनाओं को भली प्रकार परखने में सम्पादक की लेखनी सर्वथा समर्थ सिद्ध हुई है। 'दयानन्द चरितम्' के छन्द महर्षि दयानन्द सरस्वती की संकल्प-शक्ति की दृढ़ता को उजागर करते हुए परोक्षतः यही संदेश देते हैं कि सत्-संकल्प सर्वथा विजयी होता है। 'जिज्ञासा और समाधान' का प्रसंग बहुत आकर्षक है और विचारपूर्ण भी। श्रीयुत् सेवकराम आर्य जी का आलेख 'स्वामी सत्यपति परिव्राजक' सर्वथा पठनीय, मननीय और स्मरणीय है। 'अक्षर लोक' के अन्तर्गत 'द्रौपदी के पांच पति', 'विदेशियों का संस्कृत प्रेम' और 'ऋतम्भरा' (दोहासंग्रह) सहज आकर्षक कृतियाँ हैं। श्री जयप्रकाश शुक्ल जी की स्व.सरला जी विषयक रचना की मार्मिकता प्रशंसनीय है। 'आर्य संस्कृति के मूल तत्व' धारावाहिक गंभीर विचार-प्रधान कालजयी रचना है। इससे कृतिकार डॉ.सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार की गहन विवेचनाशक्ति का सूक्ष्म और सारपूर्ण परिचय मिलता है। महात्मा आनन्द स्वामी सरस्वती के व्याख्यान 'शंकर और दयानन्द' की तुलनात्मक मीमांसा सर्वथा पठनीय और मननीय है। 'काव्यायन' स्तंभ में श्री गौरीशंकर वैश्य 'विनम्र', श्रीशरत्न पाण्डेय, सुश्री रामा आर्य 'रमा', सुश्री सुषमा मिश्र, श्री बाँके बिहारी 'हर्ष', श्री दयानन्द जड़िया 'अबोध'- सभी की रचनाएँ स्व.सरला जी के अवसान से विह्वल दिखलाई पड़ती हैं। महाकवि प्रसाद के 'आँसू' की 'विकल रागिनी' तो और अधिक करुणा विगलित् कर देती है।

इसके साथ ही स्व.सरला जी की स्मृतियों के परिपूरित विभिन्न प्रकार के समाचार, श्रद्धांजलियाँ और संदेश पत्र को विशिष्ट बनाने में सफल हुए हैं। परमादरणीया स्व.सरला जी को विनम्र श्रद्धांजलि नमन।

-उमाशंकर शुक्ल 'शितिकण्ठ'
त्रिवेणी नगर-1, डलीगंज क्रासिंग, लखनऊ-20

***

'आर्य लोक वार्ता' पत्र को भी कोरोना

का प्रहार झेलना पड़ा। इसके साथ ही आपको अपनी भार्या, मेरी पूज्यपाद भाभी श्री, सरला आर्य का असमय चिर विछोह सहना पड़ा। महावज्रपात के बीच भी आपने अटल कर्तव्यनिष्ठा के बल पर पत्र को सहेजा और इसका जुलाई अंक समय से प्रदान किया। आपका साहस और सामर्थ्य प्रशंसनीय है। अग्रलेख में श्रीराम का उदात्त चरित्र चित्रण प्रेरणादायी है। यह वैदिक कालीन समाज का आदर्श ही है जो रामराज्य के रूप में आज भी अनुकरणीय है। 'विनय पीयूष' में 'पुरुष की परिकल्पना' शीर्षक कविता में ऋग्वेद के श्लोकों का उत्कृष्ट भावानुवाद हर्षित करता है। भाई अमृत खरे जी को साधुवाद। सम्पादकीय 'योगी की परिकल्पना' में योगी जी के लोक कल्याणकारी चरित्र का बखान सर्वथा समीचीन, सटीक और सत्यता पर आधारित है। अयोध्या को वैदिक कालीन स्वरूप देने के प्रति उनका प्रयास स्तुत्य है। सरयू से महर्षि दयानन्द जी का आत्मिक लगाव विषयक प्रसंग विपुल आह्लादकारी लगा। पत्र में सभी नियमित स्तंभों की विषय वस्तु के साथ परमपूज्य दिवंगत सरला आर्य से संबन्धित जय प्रकाश शुक्ल जी की काव्यधारा विह्वल करती है। हुतात्मा को समर्पित श्रीशरत्न पाण्डेय, सुषमा मिश्र, रामा आर्य, दयानन्द जड़िया 'अबोध' तथा अन्य वरेण्य महानुभावों की भावांजलि हृदय द्रवित है। आपने सरला आर्य का जीवन परिचय देकर बड़े पुण्य का कार्य किया है। ईश्वर आपको एवं परिवार को महाशोक सहने की शक्ति प्रदान करे। अमित गौरव, गरिमा एवं गुरुता सहेजे यह अंक मननीय, नमनीय और संग्रहणीय हो गया है।

-गौरीशंकर वैश्य 'विनम्र'
117, आदिल नगर, विकास नगर, लखनऊ

***

एक समय था जब निराशाओं की

निरंतरता में व्यथित मेरा मन दैन्य भाव में परिवर्तित होकर नियति का वरदान समझकर अंगीकृत तो कर चुका था, पर परमात्मा का कोई चमत्कार अवश्य होगा, यही एक आश्रय मात्र रह गया था। यही अन्तर्द्वन्द्व जीवन शैली बन गई थी। परिवार सहित मै। जहाँ निवास कर रहा था, उस कोठरी को उसके मालिक बैलखाना कहते थे।

एकएक एक कार घर के सामने सड़क पर आम के वृक्ष के नीचे रुकती है, उसमें से प्रसन्न मुद्रा में हंसते हुए एक परी सी महिला उतरती है, कहती है-'मैं अपने भानजों को कैसे भूल सकती हूँ, जब हरिद्वार आई हूँ, तुम जहाँ कहीं भी होते अवश्य आती।' वह और कोई नहीं, वह हमारी सरला मामी थी। देखा मामा जी भी आये हुए हैं। मैं उस दिन जितना प्रसन्न हुआ था मानो बड़ी अवधि के बाद बोध हुआ- मैं दीन मलीन नहीं हूँ, मैं मामा डॉ.वेद प्रकाश आर्य और मामी सरला का भानजा हूँ। सच मानो मैं अपने अनुभव को बिना किसी अलंकार के व्यक्त कर रहा हूँ, उस दर्शन से मेरा मन एकाएक अभिसिंचित हो गया, प्रफुल्लित हो गया, प्रकाशित हो गया।

मैं पपीता लाया जो मामा जी के लिए अनुकूल था वह। मामी जी स्वयं एक नर्स की भांति मामा जी का ध्यान रखती थीं। कब दवा देनी है क्या परहेज होना है एक धर्मपत्नी के साथ साथ पूर्ण समर्पण उनके दाम्पत्य जीवन की विशेषता थी। मामाजी की लेखनी जो अनवरत आज तक चलती चली आ रही है उसमें मामी जी की ऊर्जा सोने में सुहागा की भांति सान्निहित रही। मुझे अधिक समय नहीं मिल पाया उनका सान्निध्य पाने का, फिर भी जो मिला उससे हम प्रभावित हुए बिना नहीं रह सके। उनका प्रातः और सायं संध्या का नियम अटल था। उनकी सरल सहल मुस्कान हमें सदैव याद रहेगी और प्रेरणा देती रहेगी। मैं उनकी आत्मशान्ति की प्रार्थना कुम्भ महापर्व में मां गंगाजी से करता हूँ एवं उनका आशीर्वाद और उनकी अदृश्य ऊर्जा मामा जी के साथ ही सभी बच्चों को मिलती रहे। भावभीनी श्रद्धांजलि!

-चन्द्र प्रकाश शुक्ल
सर्वप्रिय विहार कालोनी, कनखल, हरिद्वार

***

धारावाहिक-18 कालजयी रचना

आर्य-संस्कृति के मूल तत्त्व

–डॉ. सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार–

कोई कहता है, परमात्मा है, कोई कहता है 'नियम' (Law) है--परन्तु जो-कुछ हो, भौतिक-जगत् स्वतन्त्र नहीं है, परमात्मा मानो तो भी, न मानो तो भी, यह कार्य-कारण के महान् नियम के अधीन है, उससे इधर-उधर नहीं हो सकता। आत्म-तत्त्व के साथ यह बात नहीं है। आत्म-तत्त्व भौतिक पदार्थों से एक भिन्न तत्त्व है। वर्तमान विज्ञान इसे 'आत्म-तत्त्व' न कहकर 'चेतना' (Consciousness) कहता है। 'चेतना' कहने पर भी जो बात हम कह रहे हैं उसमें फर्क नहीं पड़ता। हम इतना ही कहना चाहते हैं कि 'आत्म-तत्त्व' में--'चेतना' में--स्वतन्त्रता की अनुभूति प्रत्येक व्यक्ति को होती है। इसमें सन्देह नहीं कि मैं चारों तरफ से बंधा हुआ हूँ, परन्तु इसमें भी सन्देह नहीं कि मैं अनुभव करता हूँ कि मैं इन बन्धनों में से निकल भी सकता हूँ। कौन नहीं अनुभव करता कि ये बन्धन मेरे स्वाभाविक बन्धन नहीं हैं। जब हम किसी रोगी को देखते हैं तब पूछते हैं--तुम रोगी क्यों हो? स्वस्थ व्यक्ति को देखकर तो कोई नहीं पूछता, तुम स्वस्थ क्यों हो? अस्वस्थ व्यक्ति हर समय स्वस्थ बनने के लिये प्रयत्न करता ही रहता है, भले ही स्वास्थ्य के पीछे भागता-भागता वह मर ही जाय। बन्धनों को तोड़ने के लिये, रुग्णता से नीरोग होने के लिये, दुःखों की उलझनों को काटकर सुख के लिये 'चेतना' की यह भाग-दौड़ क्या सिद्ध करती है? क्या यह सिद्ध करती है कि हम बन्धनों में से निकल ही नहीं सकते, या यह सिद्ध करती है कि बन्धनों में से निकलने के लिये ही हम पैदा हुए हैं। हर प्राणी, हर बन्धन को तोड़ने के लिये, हर समय झटका दिया करता है, स्वतन्त्र होना चाहता है, बन्धनों से मुक्त होना चाहता है, बंधे रहना नहीं चाहता, बन्धन को देखकर जिस किसी उपाय से, सफल हो, असफल हो, उसे काटा करता है। इससे क्या यह पता नहीं चलता कि बंधनों में बंधे रहना नहीं, कार्य-कारण में उलझे रहना नहीं, इस उलझन में से निकल जाना उसका स्वभाव है। पानी गर्म कर दें, तो पड़े-पड़े वह ठंडा हो जाता है। क्यों हो जाता है? क्योंकि शीत पानी का स्वभाव है। महान्-से-महान् दुःख में पड़ा व्यक्ति भी, स्त्री-पुत्र के वियोग से पागल हो जाने वाला व्यक्ति भी कुछ देर के बाद फिर हंसने-खेलने लगता है। क्यों ऐसा होता है? क्योंकि 'आत्म-तत्त्व'--'चेतना'--सदा बन्धनों से निकलने की दिशा की तरफ जा रही है, वह बंध नहीं रही, मुक्त हो रही है--धीरे-धीरे परन्तु कितने भी धीरे हो, यह कर्मों का फल अनन्त-काल का रास्ता उसे मोक्ष की तरफ, सच्चिदानन्द की तरफ ले जा रहा है। मनुष्य में ही नहीं, पशु-पक्षी तक में बन्धन से निकल जाने की एक प्रबल भावना है। आग-पानी-हवा में, भौतिक-जगत् किसी तत्त्व में ऐसा नहीं। वे तो कार्य-कारण के नियम से ऐसे जकड़े हुए हैं कि करोड़ों वर्षों से इधर-से-उधर नहीं हिले, उनकी विशेषता ही उनका कार्य-कारण के नियम में बंधे रहना है। परन्तु मनुष्य, पशु-पक्षी, कीट-पतंगे? ये जब से सृष्टि में आये तभी से उस अनन्त सच्चिदानन्द की तरफ मुंह उठाये आगे-ही-आगे बढ़े जा रहे हैं, उसकी खोज कर रहे हैं, हर बन्धन से विद्रोह कर रहे हैं, इनके गले में कर्मों के बड़े-बड़े मजबूत रस्से पड़े हैं, परन्तु उन रस्सों को तोड़ने के लिये ये लगातार झटके-पर-झटके दिया करते हैं। इस सबका कारण क्या है? इसका कारण यही है कि यद्यपि 'आत्म-तत्त्व'--'चेतना'--बन्धन में है, तथापि इसका स्वभाव बन्धन में पड़े रहने का नहीं है। यह बन्धन में आया है बन्धन में से निकलने के लिये, कर्म में फंसा है कर्म को काटने के लिये, कार्य-कारण में उलझा है कार्य-कारण की गांठ को खोलकर उससे नहीं, परन्तु उसमें से, स्वतंत्र हो जाने के लिये।

'कार्य-कारण' तथा 'कर्म' के नियम में यही भेद है। 'कर्म', इसमें सन्देह नहीं, 'कार्य-कारण' का ही नियम है, परन्तु भेद यह है कि 'कार्य-कारण' जड़-जगत् का, 'कर्म' चेतन-जगत् का नियम है, 'कार्य-कारण' अन्धा नियम है, 'कर्म' सुजाखा नियम है, 'कार्य-कारण' प्रकृति का नियम है, 'कर्म' आत्म-तत्त्व का नियम है, प्रकृति का स्वभाव ही 'कार्य-कारण' के अटल नियम में जकड़े रहने का है, आत्म-तत्त्व का स्वभाव ही बन्धन से निकलने का, कर्मों की भारी-भारी बेड़ियों और हथकड़ियों को काट देने का है। अगर आत्म-तत्त्व एक स्वतन्त्र तत्त्व न होता, अगर पंच-महाभूतों की ही यह उपज होता, तब प्रकृति की तरह यह भी कार्य-कारण की बेड़ियों में जकड़ा रहता, तब जो हो रहा है वह अवश्यंभावी होता। हां, तब हम अगला-पिछला जन्म न मानते, यही जन्म मानते, परन्तु केवल इस जन्म को मानते हुए भी हमें कार्य-कारण की अवश्यंभाविता अवश्य माननी पड़ती। आर्य-संस्कृति ऐसा नहीं मानती। उसकी दृष्टि में आत्म-तत्त्व प्रकृति से एक भिन्न तत्त्व है। यह जबतक प्रकृति के साथ अपने को एक किये बैठा है तब तक कार्य-कारण की उलझन में पड़ा हुआ है, जहां इसने अपने स्वरूप को पहचाना, वहीं यह कार्य-कारण के बन्धन से साफ निकलकर बाहर आ खड़ा होता है। इसी को कर्म का सिद्धान्त कहा जाता है--आत्मा कर्म करने में स्वतन्त्र है--यह कहा जाता है।

तो फिर क्या स्थिति हुई? क्या 'क्रियमाण'-कर्म अवश्यंभावी हैं, जन्म-जन्मान्तर के चक्र के परिणाम हैं, या स्वतंत्र--इस जन्म में एकदम नये--भी हो सकते हैं? आर्य-संस्कृति की जिस विचारधारा का हमने अभी उल्लेख किया उसके अनुसार ये दोनों हो सकते हैं। कर्म, कार्य-कारण का ही एक रूप है, इसलिये हमारे 'क्रियमाण'-कर्म, वे कर्म जिन्हें हम इस जन्म में, इस समय कर रहे हैं, पिछले कर्मों का भी फल हो सकते हैं, कार्य-कारण की शृंखला में एक कड़ी ही हो सकते हैं, और क्योंकि आत्म-तत्त्व की नींव ही स्वतन्त्रता पर खड़ी है, इसलिये ये 'क्रियमाण' कर्म आत्म-तत्त्व के इस जन्म के सर्वथा स्वतन्त्र कर्म भी हो सकते हैं। इन्हें पिछले जन्मों का फल या इस जन्म के स्वतन्त्र कर्म मानने से कार्य-कारण के नियम में कोई त्रुटि नहीं आती।

कर्म के सिद्धन्त को मानने में सबसे बड़ी निराशा की बात यह आ पड़ती है कि हम अपने को स्वतंत्र कर्म करने में, पुरुषार्थ करने में अशक्त पाते हैं, सबकुछ दैव, भाग्य समझने लगते हैं।

('आर्य संस्कृति के मूलतत्त्व' ग्रंथ से साभार, क्रमशः)

व्याख्यान माला-10

शंकर और दयानन्द

–महात्मा आनन्द स्वामी सरस्वती–

मन को एकाग्र करने में आसन बहुत सहायता करता है। योगी लोग कहते हैं कि यदि कोई व्यक्ति ३ घण्टे ३६ मिनट बिना हिले डुले, बिना थके और बिना कष्ट के एक ही आसन में बैठ सके तो उसका मन स्वयंमेव एकाग्र हो जाता है। आरम्भ में तो तीन घण्टे ३६ मिनट का आसन लगाया नहीं जा सकता, इस दशा को प्राप्त करने की विधि यह है कि पहले आप जितनी देर बैठ सकते हैं उतनी ही देर बैठिये, यदि आप आध घण्टा बैठ सकते हैं तो आध घण्टा बैठिये, तब इस समय को पाँच-पाँच मिनट करके बढ़ाते जाइये। एक सप्ताह ३५ मिनट, दूसरे सप्ताह ४० मिनट, फिर ४५ मिनट, इसी प्रकार धीरे-धीरे बढ़ाते जाइये, अन्त में तीन घण्टे और ३६ मिनट की दशा भी उत्पन्न हो जायेगी। फिर एक और बात भी याद रखिये, कि जहाँ आप एक बार ध्यान लगाते हैं, चाहे भृकुटि या हृदय में, प्रतिदिन वहीं लगाते रहें, ध्यान लगाने के स्थान को न बदलें।

अब सुनिये चौथे साधन की बात, जिसे महर्षि दयानन्द और शंकराचार्य ब्रह्म प्राप्ति के लिये आवश्यक समझते हैं। इस साधन का नाम है 'मुमुक्षत्व' मुक्त होने की प्रबल इच्छा। इस इच्छा का अर्थ यह है कि संसार के लोगों से हटाकर अपने आपको ईश्वर की ओर लगा दो, ईश्वर का दर्शन पाने के लिये, उसे प्राप्त करने के लिये इस प्रकार व्याकुल हो जाओ जैसे पानी से बाहर आई हुई मछली व्याकुल हो जाती है।

इस दशा के सम्बन्ध में महर्षि दयानन्द ने सत्यार्थ प्रकाश में जो कुछ लिखा है वह सुनिये, महर्षि कहते हैं, जैसे 'क्षुधातृषातुर को सिवाय अन्न जल के दूसरा कुछ भी अच्छा नहीं लगता, वैसे बिना मुक्ति के साधन और मुक्ति के दूसरे में प्रीति न होना।'

नवयुवक पति जैसे पत्नी के लिये, पत्नी जैसे पति के लिये व्याकुल होती है, ऐसी व्याकुलता ईश्वर को पाने के लिये उत्पन्न हो जाये, तो उसे मुक्त होने की इच्छा कहते हैं, उसे मुमुक्षत्व कहते हैं।

जगद्गुरु शंकराचार्य कहते हैं तीन बातें बहुत कठिनता से प्राप्त होती हैं। मनुष्यत्व, मुमुक्षत्व और साधु की संगत। मनुष्य बनना, मनुष्य बनने के पश्चात् मुक्त होने की इच्छा और मुक्त होने की इच्छा के पश्चात् ऐसे महापुरुष की संगत जो इस इच्छा को पूर्ण करने का मार्ग दिखा सकता हो।

कहते हैं कि मनुष्य शरीर ८४ लाख शरीरों में घूमने के पश्चात् मिलता है, परन्तु यह ८४ लाख तो केवल कहने की बात है। मनुष्य शरीर के अतिरिक्त दूसरे शरीर ८४ लाख के कई हजार गुणा अधिक हैं। जिस पृथ्वी पर हम रहते हैं, इस पर कई करोड़ प्रकार के शरीर हैं। यह पृथ्वी है सौर मण्डल का एक छोटा सा भाग। इतना छोटा कि इसके एक और ग्रह बृहस्पति में १३५० पृथ्वियाँ समा सकती हैं। इस विशाल सौर मण्डल में एक छोटी सी गेंद की भाँति यह पृथ्वी उड़ी जाती है, जिस पर आज ढाई अरब मनुष्य रहते हैं। परन्तु यह सौर मण्डल जिसे हम विशाल कहते हैं, उस महा सूर्य मण्डल में धूल के एक कण के समान है, जिसका एक भाग हम 'आकाश गंगा' के रूप में रात्रि के समय देखते हैं। इस महा सूर्य मण्डल में और दूसरे महा मण्डलों में जिन्हें विज्ञान के विद्वानों ने अभी तक बड़ी बड़ी दूरबीनों से देखा, इतने सौर मण्डल यदि पृथ्वी पर रहने वाले प्रत्येक व्यक्ति को तीन सौर मण्डल भी दे दिये जांय, तो करोड़ों सौर मण्डल फिर भी बच जायेंगे। प्रत्येक बार जब कोई नई दूरबीन बनती है, तब कितने ही सौर मण्डल और नये महामण्डल दृष्टिगोचर होते हैं। इन अनन्त सौर मण्डलों के केवल ८४ लाख प्रकार के ही जीवन नहीं, उनकी संख्या और अधिक है। साधु और सन्त जब ८४ लाख कहते हैं, तो उनका तात्पर्य होता है बहुत अधिक। इन अनगणित शरीरों में से गुजरने के पश्चात् आत्मा को मनुष्य का शरीर मिलता है। इसी लिए शंकराचार्य ने कहा कि मनुष्य का जन्म मिलना बहुत कठिन है। यह शरीर मिल भी जाये तो जन्म और मरण के बन्धन से मुक्ति पाने की इच्छा का उत्पन्न होना और भी कठिन है और यह इच्छा उत्पन्न भी हो जाये तो ऐसे साधु सन्तों और महात्माओं का मिलना बहुत कठिन है, जो मुक्ति का मार्ग दिखा सकते हैं, उस पर चलने में सहायता दे सकते हैं। ये तीनों बातें हों उसके पश्चात् वे चारों साधन पूरे किये जायें, जिनकी मैंने पिछले भाषण में चर्चा की थी, तब ब्रह्म की जिज्ञासा के, आरम्भ करने का अधिकार मिलता है। तब यह पूछने का अधिकार मिलता है, ब्रह्म क्या है? उसका स्वभाव क्या है? उसके समीप पहुँचने का मार्ग क्या है? इन सभी बातों का उत्तर महर्षि दयानन्द और जगद्गुरु शंकराचार्य ने जो कुछ दिया है कल से हम उसका वर्णन करेंगे, कले से हम वेदान्त के विशाल वन में प्रविष्ट होंगे।

।।ओ३म् शुभम्।।

पांचवां दिन

मेरी प्यारी माताओं तथा सज्जनों!

कल मैंने कहा था कि आपको वेदांत के विशाल वन में ले चलूँगा। उसमें भ्रमण कराऊँगा, परन्तु ऐसा करने से पूर्व दो प्रश्नों के उत्तर देना चाहता हूँ जो आप में से कुछ सज्जनों ने मेरे पास भेजे हैं। पहले प्रश्न को पूछने वाले सज्जन कहते हैं कि कई दिन से हम आपकी कथा सुन रहे हैं, उसमें आनन्द भी लेते हैं, जी लगता है उसमें, परन्तु प्रतिदिन आप आत्मा की बात करते हैं उसका क्या लाभ है? संसार को और विशेष कर भारत को आज आवश्यकता है भौतिक उन्नति की, उद्योग धन्धों और कृषि के क्षेत्र में, आगे बढ़ने की, धन की, व्यापार की बात सुनाने के स्थान पर आप जो आत्मा की कहानी सुनाते फिरते हैं, उससे क्या लाभ होगा? पता नहीं कि आत्मा है भी या नहीं, यदि हो भी तो उसके मिल जाने से क्या लाभ होगा?

यह है प्रश्न--इसे देखकर मुझे तनिक भी आश्चर्य नहीं हुआ। कथा को आरम्भ करते समय मैंने आपको महात्मा विदुर और धृतराष्ट्र की बात सुनाई थी, ठीक ऐसी ही बात है यह। विदुर ने कहा था, 'समस्त संसार आज लोभ, भय और क्रोध से पागल हो गया है।' पाँच सहस्र वर्ष पूर्व यदि यह बात ठीक थी तो आज भी सत्य है। पांच सहस्र वर्ष पूर्व यदि संसार दुःख से पागल था तो आज उससे अधिक दुःखी, और अधिक पागल है। भौतिक उन्नति हुई है अवश्य, विज्ञान आगे बढ़ा है, औद्योगिक और कृषि उत्पत्ति बढ़ी है, परन्तु सुख भी है किसी को? धनी से

धनी और निर्धन से निर्धन व्यक्ति से जाकर पूछो, क्या वह सुखी है? योरप और अमेरिका तो उद्योग और कृषि में हमसे बहुत आगे हैं, विज्ञान में आगे हैं, सम्पत्ति और व्यापार में आगे हैं। उनसे जाकर पूछो क्या वे सुखी हैं? क्या उनके मन में आनन्द है, शान्ति है। यदि है, तो फिर वे लड़े क्यों मरते हैं, अन्धाधुन्ध भागे क्यों जाते हैं? भय, क्रोध और लोभ से पागल क्यों हो गए हैं? नहीं, मेरी माताओं, मेरी बेटियों, मेरे भाइयों, सुखी न होने का कारण है केवल यह कि संसार आत्मा को भूल गया है? संसार में आनन्द कहाँ है? इस प्रश्न की गम्भीरता में जब जाओगे तो पता लगेगा कि आत्मा को खोजे बिना आत्मा को पाये बिना सच्चा आनन्द कभी नहीं मिलता।

अथर्ववेद काण्ड दस, सूक्त दो का तैतीसवाँ मन्त्र कहता है कि- 'उसकी आँखें नहीं जातीं, उसके प्राण नहीं जाते, जो आत्मा के रहने के स्थान को जानता है। ब्रह्मपुरी में रहने वाले आत्मा को जो जान लेता है, वह जरावस्था तक आँखों वाला, प्राण, नाक और कान वाला, वाणी वाला इन्द्रियों का स्वामी बना रहता है।'

इस मन्त्र में प्राण का अर्थ है स्वास्थ्य। आँख, कान, नाक, वाणी और इन्द्रियों के रहने का अर्थ है कि ये सब ठीक और स्वस्थ दशा में रहती हैं और जरा का अर्थ क्या है? क्या आप जानते हैं? साधारणतया जरा शब्द का अर्थ समझा जाता है बुढ़ापा। परन्तु सुनो! जरा बुढ़ापे को नहीं कहते, बुढ़ापे से पश्चात् की दशा को कहते हैं। आयुर्वेद के अनुसार उत्पन्न होने से आठ वर्ष तक की आयु को बचपन कहते हैं। आठ से सोलह वर्ष की आयु को कुमारावस्था कहते हैं। सोलह से सत्तर वर्ष की आयु को यौवन कहते हैं। सत्तर से सौ वर्ष की अवस्था को बुढ़ापा कहते हैं और सौ से एक सौ बीस वर्ष की आयु को जरा कहते हैं। आज यह बात कुछ व्यक्तियों को बहुत आश्चर्यजनक प्रतीत होगी, परन्तु महाभारत के युद्ध में जो लोग लड़ रहे थे, उनमें कितने ही ऐसे थे, जिनकी आयु डेढ़ सौ, दो सौ वर्ष थी। कृष्ण और अर्जुन दोनों एक सौ बीस वर्ष के थे। भीष्म तो अर्जुन के पितामह थे। द्रोण की आयु चार सौ वर्ष बताई जाती है और वे इस प्रकार लड़ रहे थे जिस प्रकार युवक लड़ते हैं--यह है आत्मा को जानने का एक लाभ। आत्मा को जानने वाले सौ वर्ष के पश्चात् भी पूर्ण स्वस्थ, प्राण, आँख, कान और वाणी वाला बना रहता है। परन्तु यह तो केवल एक लाभ है। बहुत साधारण सा लाभ। परन्तु तुम्हारी समस्त उन्नति से अधिक जिसे तुम औद्योगिक, कृषिक, व्यापारिक और आर्थिक उन्नति कहते हो।

अब एक और लाभ सुनो। जब आत्मा जाग जाता है, जब आत्मा प्राप्त हो जाता है, तब तक ऐसी शक्ति मनुष्य में आती है जैसी शक्ति और किसी उपाय से नहीं मिलती।

('शंकर और दयानन्द' से, क्रमशः)

काव्यायन

–स्व.सरला आर्य के प्रति–

'माँ' सी मौसी

❑करुण मिश्र

'माँ' सी होती है मौसी
कुछ अलग कुछ उसीके जैसी
जब थपथपाये पीठ पर
लगे जैसे माँ का हाथ
जब भर ले अपनी बाहों में मुझे
लगे माँ के आँचल का साथ
ढूंढूँ कभी माँ को अपनी
तो पालूँ सकून मासी के पास
रंगरूप में है अलग पर
होता है माँ का अहसास

–बहर, जिला–हरदोई

जीवन-सरिता

❑दयानन्द जड़िया 'अबोध'

जीवन–सरिता में उठतीं,
अविरल अविराम तरंगें।
दुख के हैं भ्रमर कहीं तो,
सुख–कमल कहीं बहुरंगे।।

पुलिनों के तरु ज्यों छाए,
कल–कल निनादिनी सरि पर
छाई त्यों जटिल समस्या,
निर्मल मानव–जीवन पर।।

ज्यों स्वच्छ सलिल को गँदला,
कर देते मिलकर नाले।
वैसे कुरीतियाँ हम पर,
भ्रमदायक डेरा डाले।।

पाती जब सुख का प्रांगण,
तटबन्ध तोड़ तब बहती।
पा हंस सदृश्य सनेही,
निज रूप सजाती रहती।।

पर जैसे ही दुख–गिरि के,
दुर्गम पथ में है आती।
कर रूप संकुचित अपना,
बन वेगवती बढ़ जाती।।

होती विलीन ज्यों सरिता,
जाकर अनन्त अम्बुधि में,
वैसे ही मिलता जीवन–
अन्तिम क्षण शून्य पवन में।।

–चन्द्रा मण्डप, 370/27, हाता नूरबेग, सआदतगंज, लखनऊ

चिरनिद्रा में

❑रामा आर्य 'रमा'

तुम तो हो चिरनिद्रा में,
पर जाग रहे हैं स्वप्न प्रिये।

ठगा–ठगा सा बैठा राही,
अपना सब कुछ लुटा चुका।
दबा हुआ उस बोझ तले,
जिसका ऋण है नहीं चुका।
जीते भला समर वह कैसे,
बैठा पहले से ही हार लिए।
तुम तो हो चिरनिद्रा में,
पर जाग रहे हैं स्वप्न प्रिये।

छूट गया पतवार हाथ से,
जीवन डोर छूट गई।
तोड़–तोड़ तट बन्धों को,
नौका अपनी डूब गई।
खड़ा देखता मांझी तट पर,
शंकर सा विष पान किए,
तुम तो हो चिरनिद्रा में,
पर जाग रहे हैं स्वप्न प्रिये।

बिना वर्त्तिका दीप बुझ गया,
चारों ओर अंधेरा है।
हाथ पसारे खड़ा बटोही,
जाने कहाँ बसेरा है।
जला भला कैसे पायेगा,
अगणित मन के बुझे दिए।
तुम तो हो चिरनिद्रा में,
पर जाग रहे हैं स्वप्न प्रिये।

थके–थके हैं पांव हमारे,
थकी–थकी सी है बाहें।
हो शेष भला कैसे पूरी,
सोच हृदय भरता आहें।
कालचक्र है घूम रहा,
अपना निश्चय मान लिए।
तुम तो हो चिरनिद्रा में,
पर जाग रहे हैं स्वप्न प्रिये।

('मन आँगन आकाश पराया' से)

–417/10, निवाजगंज, चौक, लखनऊ

सुबह सुबह

❑श्रीशरत्न पाण्डेय

क्रोध तुम्हारा सुबह सुबह।
मैं मन हारा सुबह सुबह।
चेहरा लाल धनुष सी भौंहे
हुआ उजारा सुबह सुबह।
ललित भाव व कुटिल भंगिमा,
सब जग हारा सबुह सुबह।
हड़बड़ हड़बड़ एक चाय पर,
सब जग वारा सुबह सुबह।
बिना दोष ही वाक् शरों से,
हत् बेचारा सुबह सुबह।
जाकर, आएगा जाने को,
एक बेचारा सुबह सुबह।
श्रमित, सिंधु मे त्रस्त चंद्रमा,
डूब रहा है सुबह सुबह।।

–डी–14, वसन्त कुंज,, लखनऊ

बादल

❑गौरीशंकर वैश्य 'विनम्र'

उमड़–घुमड़ कर आये बादल।
आसमान में छाये, बादल।

कागज की नावों जैसे,
किसने हैं तैराये बादल।
कहीं कोयला, कहीं रुई के,
जैसे ढेर लगाये, बादल।

फैला आँखों का काजल–सा,
किसने भला रुलाये बादल।
डाँट रही है, बिजली दीदी,
फिर भी शोर मचाये बादल।

काले, सिन्दूरी, नारंगी,
रंग के टब भरवाये बादल।
चलता है वीडियोगेम–सा,
या पिक्चर दिखलाये बादल।

–117, आदिल नगर, लखनऊ–22

हर्ष–चतुष्पदी

❑बाँके बिहारी 'हर्ष'

दुर्योधन के पकवान से अच्छा विदुर का साग है,
जल रही फिर क्यों जगत में द्वेष-ईर्ष्या आग है,
वही अपना मार्ग है, जिस पर महाजन हों गये-
बेवजह संसार में अनुराग-वैर-विराग है।।

विद्या वही जिसमें विनय हो ज्ञान और विवेक हो,
है मनुज वह पूज्य जिसके सब इरादे नेक हों,
क्या करेंगी आँधियाँ संसार में संघर्ष की-
जब कटक से अटक तक देश अपना एक हो।।

–अवध मोटर वर्क्स, सिविल लाइन्स, फैजाबाद

कालजयी काव्य

कर्म का अधिकार है

❑राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त

जो धर्म–पालन से विमुख, जिसको विषय ही भोग्य है,
संसार में मरना उसी का सोचने के योग्य है।
जो इन्द्रियों को जीतकर धर्माचरण में लीन है,
उसके मरण का सोच क्या? वह मुक्त बन्धनहीन है।।
संसार में सब प्राणियों का देह तक सम्बन्ध है,
पड़ मोह–बन्धन में, मनुज बनता स्वयं ही अन्ध है,
तनुधारियों का बस यहाँ पर चार दिन का मेल है,
इस मेल के ही मोह से जाता बिगड़ सब खेल है।
सम्पूर्ण दुःखों का जगत में मोह ही बस मूल है,
भावी विषय पर व्यर्थ मन में शोक करना भूल है।
निज इष्ट साधन के लिए संसार–धारा में बहे,
पर नीर से नीरज–सदृश इससे अलिप्त बना रहे।।
उत्पत्ति होती है जहाँ पर नाश भी होता वहाँ,
होता विकास जहाँ सखे! है ह्रास भी होता वहाँ।
होता जहाँ पर सौख्य है दुख भी वहाँ अनिवार्य है,
करती प्रकृति अविराम अपना नियम पूर्वक कार्य है,
सुख–दुख विचार–विहीन तुमको कर्म का अधिकार है,
संसार में रहना नहीं पाना अचल उद्धार है।

('जयद्रथ वध' से)

स्वतंत्रता दिवस पर

❑शमशेर बहादुर सिंह

फिर वह एक हिलोर उठी–
गाओ !

वह मजदूर किसानों के स्वर कठिन हठी
कवि हे, उनमें अपना हृदय मिलाओ!
उनके मिट्टी के तन में है अधिक आग,
है अधिक ताप!
उस में कवि हे,
अपने विरह मिलन के पाप जलाओ!
काट बुर्जुआ भावों की गुमठी को–
गाओ !

अति उन्मुक्त नवीन प्राण स्वर कठिन हठी!
कवि हे, उनमें अपना हृदय मिलाओ!
सड़े पुराने अन्ध–कूप गीतों के
अर्थहीन हैं भाव, मूक गीतों के–
उन्हें अपरिचय का लांछन दे बिलकुल आज भुलाओ।
नूतन प्राण–हिलोर उठी
तुम, जिस ओर उठी, उठ जाओं!
कवि हे....

('श्रेष्ठ हिन्दी गीत संचयन' से)

किसान

❑राघवेन्द्र शर्मा त्रिपाठी 'ब्रजेश'

ईस को है डर तेतो नहीं
जिती मालिक की रहै भीति रिसान की।
खेत मैं एतो करैं श्रम को
न रहै सुधि हीमैं दिसा बिदिसान की।
पैट भरैं नित औरन को
पर आप लहैं यक मूठि पिसान की।
भूलैं ब्रजेश हमैं न कबौं
उपकारिता ऐसी गरीब किसान की।।

–'ब्रजेश विनोद' से

अक्षर लोक

वैदिक यज्ञ प्रकाश
सम्पादक : डॉ.वेद प्रकाश आर्य
प्रस्तुति : पेपरबैक, पृष्ठ : ६२
मूल्य : १०० रुपये
प्रकाशक : आर्य लोक वार्ता प्रकाशन, लखनऊ
प्राप्ति स्थान: अरविन्द यादव, बी ४/२३२, विशाल खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ–२२६०१०

'वैदिक यज्ञ प्रकाश' का पांचवा परिष्कृत संस्करण प्रकाशित हुआ है। यह स्वामी दयानन्द सरस्वती कृत 'संस्कार विधि' के अनुक्रमानुसार यज्ञ-हवन की प्रामाणिक पुस्तक है। वैदिक विद्वान डॉ.वेद प्रकाश आर्य द्वारा सम्पादित 'वैदिक यज्ञ प्रकाश' के पूर्व प्रकाशित संस्करणों का आर्य जनता द्वारा हार्दिक स्वागत किया जाता रहा है। पंचम संस्करण में कुछ संशोधन किये गये हैं और कुछ नयी बातें जोड़ी गयी हैं। यद्यपि समस्त संशोधन-परिवर्द्धन 'संस्कार विधि' की मर्यादा में रहकर ही किये गये हैं। सम्पादक का निश्चित मत है कि 'संस्कार विधि' में संशोधन, परिवर्तन या परिवर्धन करने का अधिकार किसी को भी नहीं है।

'वैदिक यज्ञ प्रकाश' पुस्तक का प्रारम्भ 'यज्ञ से पूर्व' (डॉ.वेद प्रकाश आर्य) और 'वैदिक यज्ञ प्रकाश का वैशिष्ट्य' (स्मृतिशेष डॉ.शान्तिदेव बाला) शीर्षक लेखों से होता है। दोनों लेख इतने महत्वपूर्ण हैं कि बिना इन्हें ठीक से पढ़े-समझे पाठक को आगे नहीं बढ़ना चाहिए। डॉ.वेद प्रकाश आर्य लिखते हैं कि यज्ञ श्रेष्ठतम कर्म तो है, किन्तु यह तभी फलदायी होता है, जब यह शास्त्र विधि के अनुसार हो। शास्त्र विधि का अर्थ है, 'संस्कार विधि'। प्रस्तुत पुस्तक शास्त्र विध से यज्ञ-कर्म सम्पन्न करने-कराने के उद्देश्य से ही प्रकाशित की गयी है।

डॉ.शान्तिदेव बाला लिखती हैं कि डॉ.आर्य ने कुछ ऐसे बिन्दु उठाये हैं, जो हमें यज्ञ कर्म पर पुनर्विचार करने की प्रेरणा देते हैं। उन्होंने हवन करते समय प्रत्येक मंत्र के आरम्भ में ओ३म् का उच्चारण भी आवश्यक बताया है। उन्होंने एतदर्थ जो तर्क दिए हैं, हमें उन्हें गम्भीरता से लेना होगा। 'यज्ञ का पंचशील' में यज्ञ से सम्बन्धित अत्यन्त व्यावहारिक सुझाव दिये गये हैं। यह यज्ञ कर्म की गरिमा को बढ़ाने वाले हैं। 'ईश्वर स्तुति प्रार्थना उपासना', 'स्वस्तिवाचन' और 'शान्तिकरणम्' के मंत्रों के पूर्व बार-बार स्मरण कराया गया है कि प्रत्येक मंत्र के आरम्भ में 'ओम्' का उच्चारण अनिवार्य रूप से करें।

'वैदिक यज्ञ प्रकाश' के यज्ञ प्रकरण को इस प्रकार प्रस्तुत किया गया है कि कोई भी व्यक्ति आसानी से यज्ञ सम्पन्न कर सकता है। पदे-पदे दिये गये निर्देश सरल, स्पष्ट और व्यावहारिक हैं। इस के बाद 'आशीर्वचन' और 'विशेष अवसरों हेतु दिये गये मंत्र' विशेष उपयोगी हैं।

'यज्ञ प्रकरण' के पश्चात 'वैदिक संध्या' की प्रस्तुति पुस्तक की उपादेयता को बढ़ाने वाली है। 'वैदिक राष्ट्रगीत' (काव्यानुवाद के साथ) और 'प्रातःकालीन प्रार्थना' के मंत्र पुस्तक की गरिमा को बढ़ाते हैं। सभी पर्वों और जयन्तियों के अवसर पर सामान्य यज्ञ सम्पन्न करने और पूर्णाहुति देने से पूर्व विशेष आहुतियों को देने के लिये उपयुक्त मंत्रों का उल्लेख आवश्यक निर्देश-टिप्पणियों के साथ देकर पुस्तक को पूर्णता प्रदान की गयी है। यहां यज्ञ कर्त्ता को 'नव संवत्सर एवं आर्य समाज स्थापना दिवस', 'श्री रामनवमी', 'श्रावणी', 'विश्वकर्मा जयन्ती', 'श्रीकृष्ण जन्माष्टमी', 'विजयादशमी', 'दीपावली', 'महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस', 'मकर संक्रान्ति', 'वसन्त पंचमी', 'सीता अष्टमी', 'शिवरात्रि (बोध रात्रि), 'होली', पर्वों पर आहुतियों हेतु मंत्र मिल जाते हैं। 'महापुरुष जयन्ती दिवस' और 'आदर्श नारी स्मृति दिवस' पर देय आहुतियों हेतु मंत्र अलग से दिये गये हैं। पुस्तक के सम्पादक का मत है कि माता, पिता अथवा अन्य अतिविशिष्ट व्यक्तियों के जन्म दिवस अथवा स्मृति दिवस पर यजुर्वेद के ३६वें अध्याय के मंत्रों से आहुतियां देनी चाहिए। पुस्तक में सम्बन्धित समस्त मंत्र भी प्रकाशित कर दिये गये हैं। राष्ट्रीय पर्वों पर देय आहुतियों से सम्बन्धित वेद मंत्र भी उपलब्ध हैं।

पुस्तक के अन्तिम पृष्ठों में 'प्रभुभक्ति गान', 'महर्षि दयानन्द गुणगान', 'ओम् जय जगदीश हरे' और 'संगठन सूक्त' शीर्षकों के अन्तर्गत सुन्दर भजन, गान आदि यथासम्भव रचनाकारों के उल्लेख के साथ दिये गये हैं।

'वैदिक यज्ञ प्रकाश' पुस्तक का प्रकाशन यज्ञ, वेद और आर्य समाज के ख्यातिलब्ध प्रचारक श्री सुरेन्द्र सिंह यादव (मैनपुरी) की पुण्य स्मृति में किया गया है। पुस्तक के कवर पेज-३ पर उन्हें सचित्र श्रद्धांजलि दी गयी है।

यज्ञ कर्म में रुचि रखने वालों के लिये यह पुस्तक अत्यन्त महत्वपूर्ण है।

अत्यावश्यक सूचना

हम अपने उन उदारचेता दानदाता/सहयोगियों को हार्दिक धन्यवाद देते हैं, जो समय समय पर अपने कर्तव्य पालन की दृष्टि से 'आर्य लोक वार्ता' को आर्थिक मदद करते रहते हैं। वस्तुतः ऐसे उदारचेताओं ने ही 'आर्य लोक वार्ता' को २३ वर्षों से सतत जीवित जागृत एवं सचेष्ट बनाये रखा है। निश्चय ही 'आर्य लोक वार्ता' को दिया गया सहयोग वेद प्रचारार्थ होता है, जो एक पुण्य कार्य है।

बैंक आफ बड़ौदा, विभव खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ के 'आर्य लोक वार्ता' के खाता सं.४६६००१०००००६५० में जो भी सहयोग धनराशि आप जमा करते हैं, नम्र निवेदन है कि इसकी सूचना अवश्य दें ताकि आपको यथासमय प्राप्ति/रसीद भेजी जा सके।

-प्रधान सम्पादक

लखनऊ-समाचार

आर्य समाज चन्द्रनगर

आर्य समाज चन्द्रनगर के तत्वावधान में स्वतंत्रता दिवस का कार्यक्रम प्रतीकात्मक रूप में मनाया गया। स्वतंत्रता दिवस पर मंगलकामनाएँ की गईं तथा कोरोना संक्रमण से सदा सतर्क और सावधान रहने की अपील की गई। *(रणसिंह)*

आर्य समाज इन्दिरानगर

आर्य समाज इन्दिरानगर के तत्वावधान में कोरोना महामारी को ध्यान में रखते हुए प्रतीकात्मक रूप में श्रावणी उपाकर्म तथा श्रीकृष्ण जन्माष्टमी पर्व क्रमशः २२ अगस्त एवं २९ अगस्त २०२१ को आर्य समाज मंदिर, वैशाली इन्क्लेव इन्दिरा नगर प्रातः ८ से १०.३० बजे तक मनाया जायगा। इस अवसर पर यज्ञ के ब्रह्मा श्री डोरीलाल आर्य एवं श्री रामेन्द्र वर्मा होंगे। वैदिक उपदेश हेतु डा.निष्ठा वेदालंकार व डा.सत्यकाम आर्य को आमंत्रित किया गया है। *(डोरीलाल आर्य)*

स्व.सरला आर्य का जीवन हम सबके लिए पाथेय है

-प्रेमचन्द शर्मा

श्रीमती सरला आर्य का निधन मुख्यतः डॉ.वेद प्रकाश आर्य के निजी जीवन की अपूरणीय क्षति है। हम सब पाठकगण केवल भावावेश में समादर पूर्वक श्रद्धा एवं सहानुभूति ही प्रकट कर सकते हैं किन्तु वास्तविक दुःखानुभूति तो डॉ.आर्य ही कर सकते हैं। डॉ.आर्य का विवाह सरला जी से सन् १९५७ में हुआ और वियोग १५ मार्च २०२१ को। 'आर्य लोक वार्ता' के जुलाई अंक के पृष्ठ ८ पर प्रकाशित विवरण को पढ़कर यह अनुमान हो रहा है और मैं स्वयं अनुभव कर रहा हूँ कि डॉ.आर्य के जीवन में सरला जी का क्या स्थान था। यह परस्पर श्रद्धा व प्रेम का प्राकट्य है। तत्कालीन शिक्षा जगत के मूर्धन्य विद्वान, डॉ.वेद प्रकाश आर्य, जिन्होंने १९७३ में पी-एच.डी. की उपधि अर्जित की थी, ने एक सरल साक्षरता युक्त सामान्य परिवार की साधारण कन्या को आजीवन स्वहृदय में निरभिमानी होकर स्थान दिया, यह जीवन यात्रा की सामान्य क्रिया होगी परन्तु हम पाठकों के लिए एक विस्मयकारी एवं हृदयातिरेक करने समाज में अत्य अल्प प्रकट होने वाली घटना है। जीवन यात्रा की घटना हम सबके लिए पाथेय है। प्रेम में समर्पण तथा श्रद्धा में व्यापार एवं चपलता होती है। श्रद्धा गुणों द्वारा प्रकट होती है जब प्रेम व श्रद्धा परस्पर मिलते हैं तो भक्ति का प्रादुर्भाव होता है। कदाचित् यही मैं डॉ.आर्य व सरला जी में देख पा रहा हूँ। आप दोनों का परस्पर श्रद्धाभाव एक दूसरे के प्रति प्रेमभाव यह दोनों मिलकर भक्ति का स्वरूप लेते हैं। यही डॉ.आर्य के लेख में व्यक्त है। ऐसी महान विभूति सरला जी को प्रेमभावपूर्ण हृदय से श्रद्धांजलि।

अमित त्रिपाठी का जन्मदिवस

आर्य लोक वार्ता के प्रसार व्यवस्थापक श्री अमित त्रिपाठी का जन्मदिवस दिनांक ३ अगस्त २०२१ को शिवविहार कालोनी में मनाया गया। इस अवसर पर आयोजित यज्ञ में श्रीमती रश्मि त्रिपाठी, श्री आलोक वीर, श्रीमती शशि त्रिपाठी आदि पारिवारिक जनों ने आहुतियाँ देकर अमित जी को जन्मदिवस की बधाई दी। डॉ.वेद प्रकाश आर्य के यज्ञ सम्पन्न कराते हुए वेदमंत्रोच्चार के द्वारा यजमान के दीर्घायु होने की कामना की।

टाण्डा-समाचार

आर्य समाज टाण्डा अम्बेडकरनगर द्वारा श्रीकृष्ण जन्माष्टमी पर्व पर चतुर्दिवसीय समारोह

आर्य समाज टाण्डा (अम्बेडकरनगर) के तत्वावधान में श्रीकृष्ण जन्माष्टमी पर्व उत्साह और उल्लास के साथ मनाया जायगा। दिनांक २७ से ३० अगस्त २०२१ को आयोजित कार्यक्रम में प्रख्यात विद्वान आचार्य श्री चन्द्रदेव शास्त्री पधार रहे हैं। प्रतिदिन यज्ञ, भजन एवं प्रवचन की त्रिवेणी प्रवाहित होती रहेगी, जिसमें आवगाहन का सुअवसर टाण्डा तथा पार्श्ववर्ती जनपदों के बन्धुओं को सुलभ होगा। इस अवसर से अवश्य ही सभी लाभ उठायें। श्री आनन्द कुमार आर्य, प्रधान, आर्य समाज टाण्डा ने सभी को सादर आमंत्रित किया है। अंतिम दिन का समारोह विशेष होगा।

बहराइच-समाचार

रामचरितमानस वेदमंत्रों को समझने में सहायक

-प्रेमचन्द शर्मा

'आर्य लोक वार्ता' के प्रचार प्रमुख श्री प्रेमचन्द शर्मा पत्र की दिनप्रतिदिन बढ़ती हुई लोकप्रियता का मुख्य कारण प्रधान सम्पादक डॉ.वेद प्रकाश आर्य द्वारा लिखित उनके सम्पादकीय लेखों को मानते हैं। इन सम्पादकीय लेखों में सम्पादक द्वारा वेदमंत्रों के बीच बीच रामचरितमानस के उद्धरण भी दिये जाते हैं- जो पाठकों को अत्यंत रुचिकर लगता है। वेदमंत्रों के प्रति तो आम जनता का श्रद्धाभाव है किन्तु रामचरितमानस उनकी जिन्दगी का अंग बन चुका है। अतः रामचरितमानस के माध्यम से वेदमंत्रों को समझने में जनता को आसानी तो होती ही है; उसे अधिक आनन्द भी आता है।

होशंगाबाद-समाचार

'अबोध' को दोहादित्य अलंकरण

शिवसंकल्प साहित्य परिषद, नर्मदापुरम के तत्वावधान में नर्मदा जयन्ती के अवसर पर श्री हरिवल्लभ शर्मा की अध्यक्षता में साहित्यिक समारोह सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम का आरम्भ डॉ.भारती मिश्रा की वाणी वन्दना एवं श्रीमती वैष्णव भारती के शिव ताण्डव नृत्य के साथ हुआ। इस अवसर पर लखनऊ निवासी साहित्यकार श्री दयानन्द जड़िया 'अबोध' की सद्यः प्रकाशित काव्य-कृति 'ऋतम्भरा' (सिंहावलोकन दोहा-संग्रह) का लोकार्पण हुआ और उन्हें 'दोहादित्य' की उपाधि प्रदान की गई। समारोह में देश के अनेकानेक भागों से पधारे कवि/साहित्यकारों को अंगवस्त्र, स्मृतिचिन्ह व सम्मान पत्र प्रदान कर सम्मानित किया गया। जिन प्रमुख विभूतियों की उपस्थिति रही उनमें डॉ.कृष्णगोपाल मिश्र, प्राचार्या श्रीमती नीलकण्ठ उपाध्याय, बाबूलाल खण्डेलवाल एवं मधुर जैन 'मधुर' इत्यादि प्रमुख थे। इस अवसर पर अनेक कवियों ने अपने सरस काव्य रचनाओं का पाठ किया जिसका बड़ी संख्या में आये हुए श्रोताओं ने स्वागत किया।

लखनऊ-समाचार

गौरीशंकर वैश्य 'विनम्र' का 70वाँ जन्मदिवस

बाल साहित्य के सशक्त हस्ताक्षर, आशुकाव्य रचना में प्रवीण, प्रबन्ध काव्यों के प्रणेता एवं 'आर्य लोक वार्ता' के संवाद प्रमुख श्री गौरीशंकर वैश्य 'विनम्र' का जन्म दिवस २५ जुलाई है। डाक विभाग के उच्च पद से सेवानिवृत्त होने के बाद श्री विनम्र ने अपनी साहित्य धारा को अनेक आयाम प्रदान किये। 'विद्या ददाति विनयं' की सूक्ति को चरितार्थ करते हुए श्री विनम्र अपने नामानुरूप गुणों के धारक एवं संवाहक हैं। हिन्दी संस्थान ने विनम्र जी को बाल साहित्य प्रणेता का सम्मान २०२० में प्रदान करके स्वयं को गौरवान्वित किया है।

विनम्र का जन्म दिवस होने के नाते २५ जुलाई का महत्व अधिक बढ़ जाता है। प्रतिवर्ष आप अपने आवास पर सुंदर काव्य समारोह आयोजित करके लखनऊ के तमाम साहित्य सेवियों को काव्यपाठ का अवसर प्रदान करते हैं तथा उन्हें सम्मानित करते हैं। अपने सहधर्मियों को सम्मानित करने का भारतीय संस्कृति का संस्कार श्री विनम्र का वैशिष्ट्य है।

इस वर्ष भी २५ जुलाई २०२१ को विनम्र जी के आदिल नगर स्थित आवास पर एक साहित्यिक समारोह आयोजित हुआ, जिसकी अध्यक्षता प्रख्यात छंदकार कवि, 'ब्रज कुमुदेश' के प्रधान सम्पादक श्री अशोक पाण्डेय 'अशोक' ने की। काव्यगोष्ठी का संचालन श्री सुनील वाजपेयी एवं अशोक शुक्ल 'अनजान' ने किया। काव्यगोष्ठी का आरम्भ ऋतुराज पाण्डे की वाणी वन्दना से हुआ। विनम्र जी की सुपुत्री नमिता वैश्य ने अपने पिता को जन्मदिन पर बधाई देते हुए नारी पर रचना पढ़ी- 'मैं भारत की नारी हूँ मुझको छुईमुई मत समझो।' काव्यपाठ करने वालों में थे- भ्रमर बैसवारी, सुबोध शारदानन्दन, राम सूरत तिवारी, ऋतुराज पाण्डेय, राजाभैया 'राजाभ', वीरेन्द्र कुमार सक्सेना 'अधीर', विश्वनाथ वैश्य, डॉ.कुलदीप नारायण सक्सेना, रवीन्द्र नाथ तिवारी, नरेन्द्र भूषण।

श्री विनम्र जी ने सभी कवियों को बालकों पर रचना करने की प्रेरणा देते हुए वृद्धजन पर रचना पढ़ी- 'साक्षात भगवान वृद्धजन होते हैं, शीतल छाँव समान वृद्धजन होते हैं।' काव्य समारोह के प्रारंभ में समस्त कवियों ने श्री विनम्र को जन्मदिन पर बधाइयाँ दीं और पुष्पमालाएँ अर्पित कीं और रचनाओं के विविध रंग बिखेरे। समारोह का समापन जलपान व्यवस्था के साथ हुआ।

टाण्डा-समाचार

गौरवमूर्ति श्रीमती मीना आर्य को क्रूर कोरोना ने छीना

लोकोपकारिणी सौमनस्य, शालीनता एवं पारिवारिक एकता की प्रतिमूर्ति देवी

श्रीमती मीना आर्य (धर्मपत्नी श्री आनन्द कुमार आर्य) का संसार से विदा हो जाना, एक अत्यंत दुःखद एवं हृदयविदारक आघात है। यद्यपि आर्थोपीडिक समस्याओं से आप कई वर्षों से ग्रस्त थीं और वाकर का आश्रय लेकर अपने कार्यों का सम्पादन कर लेती थीं- किन्तु कोरोना द्वितीय लहर ने आपको आकस्मिक रूप में अपने आगोश में ले लिया। आपको विवेकानन्द अस्पताल, निराला नगर, लखनऊ में भर्ती कराया गया जहाँ आपने अंतिम साँस ली। आपका अन्त्येष्टि संस्कार, शान्तियज्ञ, श्रद्धांजलि सभा इत्यादि के कार्यक्रम विधिवत् टाण्डा में कोरोना के नियमों-उपनियमों का पालन करते हुए वैदिक विधि से सम्पन्न हुए।

एक बहुत बड़े आर्य परिवार को आपने इतनी कुशलता के साथ सँभाला; जिसके फलस्वरूप ही आनन्द बाबू राष्ट्रीय स्तर पर ही नहीं, अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रतिष्ठित हो सके। दो दो विश्व आर्य महासम्मेलन- आनन्द बाबू के नेतृत्व में सफलतापूर्वक हो सके, इसका बहुत कुछ श्रेय मीना जी को जाता है।

श्रीमती मीना जी का जन्म २४ अगस्त १९४५ को पटना निवासी श्री ब्रजनन्दन लाल (पूरन बाबू) के घर में हुआ जो पटना के प्रसिद्ध पापुलर मेडिकल हाल एवं पापुलर नर्सिंग होम के मालिक थे। माता-पिता ने आपका विवाह टाण्डा निवासी आनन्द बाबू (श्री आनन्द कुमार आर्य) के साथ ७ मार्च १९६४ में कर दिया। आपके दो पुत्र श्री मनीष एवं श्री अमिताभ तथा दो पुत्रियाँ- सौ.मीता तथा सौ.ममता हैं। श्री मनीष के पुत्र-पुत्री सार्थक और मान्यता हैं तथा श्री अमिताभ के पुत्र-पुत्री का नाम है आदित्य और आवन्या। टाण्डा में ही ८ नवम्बर २०१६ को १२ वर्ष की आयु में चि.आदित्य का यज्ञोपवीत संस्कार सर्वमान्य विद्वानों, विदुषियों की उपस्थिति में सम्पन्न हुआ। अपने पुत्र-पुत्रियों से आप पूरी तरह सन्तुष्ट थीं- विशेषकर श्री मनीष जी जो आपकी सेवा-सुश्रूषा में प्रतिक्षण संलग्न रहते थे। मीना जी जीवन के प्रारंभिक काल से ही दीन दुखियों की सेवा पर विशेष ध्यान देती थीं। मानव सेवा को ईश्वर पूजा के समान मानती थीं। कोलकाता के वागुई हट्टी एयरपोर्ट के पास मीना जी ने गरीब बच्चों के लिए एक पक्का स्कूल खोला जिसका उद्घाटन तत्कालीन मंत्री श्री यतीन चक्रवर्ती ने किया था। सेवाकार्यों से आप अतीव आनन्द एवं संतोष का अनुभव करती थीं।

स्व.मिश्रीलाल आर्य ने अपनी आत्मकथा में मीना जी के गुणों की भूरि भूरि प्रशंसा की है- 'आनन्द बाबू की पत्नी सौभाग्यवती मीना शिक्षित, सुशीला एवं गुणवती हैं। गृहस्थी के कार्यों में निपुण हैं, बच्चों की देखभाल एवं लिखाई-पढ़ाई में सजग रहती हैं साथ ही सामाजिक विचारों की नारी हैं। नारी जागृति, नारी उत्थान के लिए तथा दीन-दुखियों की सेवा में लायन्स क्लब के माध्यम से सक्रिय भाग लेती हैं। दोनों का दाम्पत्य जीवन सुखमय एवं आदर्श है।' ('मिश्रीलाल आर्य-एक प्रेरक व्यक्तित्व', पृष्ठ १३७)। मिश्रीलाल आर्य कन्या इंटर कालेज की सुव्यवस्था के साथ आपकी गहरी अभिरुचि डी.ए.वी.एकेडमी की स्थापना में थी। मीना जी के भागीरथ प्रयत्नों एवं योग्यता का ही परिणाम है कि आज डी.ए.वी. एकेडमी, टाण्डा सफलता के झंडे गाड़ रही है। ऐसी सौभाग्य प्रदायिनी मातृशक्ति के सहसा उठ जाने से कौन मर्माहत नहीं होगा। आनन्द बाबू, प्रिय मनीष तथा सम्पूर्ण आर्य परिवार के प्रति आर्य लोक वार्ता अपनी सहानुभूति व्यक्त करता है तथा मीना जी को भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करता है-

सामाजिकता, परिवार, सुशिक्षा की निष्णात प्रवीणा।
रहे निनादित युगों युगों तक मीनाजी की स्वर-वीणा।।

सुयोग्य, दक्ष, कार्यकुशल प्रधानाचार्या

अनीता सिंह

कोरोना की द्वितीय अपूरंणीय क्षति अतुल यश और ख्याति अर्जित करने

वाली संस्था डी.ए.वी.एकेडमी, टाण्डा, अम्बेडकरनगर की प्रधानाचार्या श्रीमती अनीता सिंह का निधन है। थोड़े से ही समय में अक्षय कीर्ति की स्वामिनी अनीता सिंह अत्यन्त कुशल और सुयोग्य प्रधानाचार्या थीं। विगत १५ अप्रैल २०२१ को कोरोना के सांघातिक आक्रमण ने आपको हम सभी से छीन लिया। अनीता जी नैनी-प्रयागराज की रहने वाली थीं। अपनी प्रारंभिक शिक्षा कानपुर में पूरी करने के बाद इलाहाबाद विश्वविद्यालय से स्नातक तथा कानपुर विश्वविद्यालय से परास्नातक उपाधियाँ प्राप्त करके आपने बारह वर्षों तक ज्ञानवती बालिका इंटर कालेज, इलाहाबाद के प्रिंसिपल के पद पर कार्यभार संभाला। इस अवधि में आपने वाराणसी से टीचर्स ट्रेनिंग भी पूरी की। सन् २००४ में जब आपने डी.ए.वी.एकेडमी, टाण्डा की प्रधानाचार्या का चुनौतीपूर्ण पद संभाला, उस समय विद्यालय प्रारंभिक अवस्था में था। थोड़े ही समय में आपने अपनी योग्यता, साहस और व्यवहार कुशलता के बल पर डी.ए.वी.एकेडमी को एक श्रेष्ठ आधुनिक शिक्षा संस्थान का स्वरूप प्रदान किया।

डी.ए.वी.एकेडमी के कार्यक्षेत्र के विस्तार की अनेक योजनाएँ आपके मस्तिष्क में थीं जिन्हें आप साकार रूप देना चाहती थीं किन्तु विधि का विधान कुछ दूसरा ही था। वे १५ अप्रैल २०२१ को ही सहसा हमारे बीच से चली गईं। समस्त डी.ए.वी.एकेडमी परिवार के साथ ही आर्य लोक वार्ता स्व.अनीता जी की पुण्यस्मृति को नमन करता है।

टाण्डा ने रचा नया इतिहास

आर्य कन्या डिग्री कालेज की हुई स्थापना

दीर्घकाल से लड़कियों की उच्चशिक्षा के लिए तरसती हुई टाण्डा अम्बेडकरनगर की जनता के लिए यह एक राहत भरी खबर है कि १ जुलाई २०२१ को टाण्डा में प्रथम महिला डिग्री कालेज की स्थापना हो गयी है। शिक्षाशास्त्री, संस्कार-मर्मज्ञ विद्वान् पं.दीनानाथ शास्त्री के आचार्यत्व और कर्मयोगी श्री आनन्द कुमार आर्य की अध्यक्षता में वैदिक यज्ञ एवं मंत्रोच्चार के मध्य कालेज स्थापना का ऐतिहासिक कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर विशेष रूप से आमंत्रित शिक्षाक्षेत्र के जाने माने आचार्य श्री विश्वव्रत शास्त्री, आर्ष गुरुकुलम् विद्यालय, जानकीपुरम, लखनऊ तथा डॉ.सत्यकाम आर्य, से.नि.विभागाध्यक्ष, रणवीर रणंजय महाविद्यालय, अमेठी ने यज्ञ सम्पन्न कराया।

बताते चलें कि आज से ७७ वर्ष पूर्व पूर्वांचल के अभाव-अशिक्षा से ग्रस्त क्षेत्र

आर्य कन्या डिग्री कालेज के प्रबंधक-श्री मनीष आर्य

टाण्डा (अम्बेडकरनगर) में ऋषिभक्त आर्य स्वतंत्रता सेनानी स्व.बाबू मिश्रीलाल आर्य ने शिक्षा का जो पहला दीपक जलाया था, वह आज प्रकाश पुंज बन चुका है। मिश्रीलाल आर्य कन्या इंटर कालेज टाण्डा की गणना प्रदेश के श्रेष्ठतम नारी शिक्षा केन्द्र के रूप में की जाती है। टाण्डा में इंटर के आगे की शिक्षा का कोई प्रबंध न होने के कारण लड़कियों की शिक्षा का मार्ग अवरुद्ध हो गया था। अतः इस अवरोध को दूर करके नारी शिक्षा हेतु महिला डिग्री कालेज की स्थापना का साहसिक एवं सामयिक निर्णय स्व.मिश्रीलाल जी के सुयोग्य उत्तराधिकारी पुत्र कर्मयोगी श्री आनन्द कुमार आर्य द्वारा लिया गया है। क्षेत्र की जनता विशेषकर नारी समाज द्वारा इस आयोजन का हार्दिक स्वागत किया गया। कालेज का कार्य सुचारु रूप से इसी सत्र से प्रारंभ हो गया है। बी.ए., बी.एस-सी., बी.काम.डी.फार्मा सभी विषयों में प्रवेश का कार्य आरम्भ हो गया है। सम्प्रति कालेज के प्रबंधन का कार्य अत्यंत कुशल, सौम्य व्यक्तित्व के धनी आनन्द बाबू के सुपुत्र श्री मनीष कुमार आर्य संभाल रहे हैं।

सीतापुर-समाचार

आर्य समाज घासमंडी का होगा कायाकल्प

चौधरी रणवीर सिंह का संकल्प

आर्य समाज सीतापुर को विवादों से उबारने तथा उसकी डाँवाडोल स्थिति को

स्थिरता प्रदान करने का श्रेय जिस एकमात्र व्यक्ति को जाता है- वह हैं चौधरी रणवीर सिंह। चौधरी साहब के प्रयत्न और पुरुषार्थ से आर्य समाज के लिए विजयलक्ष्मी नगर में एक भव्य मंदिर का निर्माण उन्होंने करा दिया है, वह एक चमत्कार ही है। इस चमत्कार के उपरान्त आपने घासमंडी स्थित पुराने आर्य समाज मंदिर के भी नवनिर्माण का बीड़ा उठाया है। घासमंडी स्थित आर्य समाज का अपना गौरवशाली इतिहास है। पुराने भवन की दशा जीर्णशीर्ण हो चुकी है। अब उसी स्थान पर नये आर्य समाज मंदिर के निर्माण का शिवसंकल्प चौधरी रणवीर सिंह द्वारा लिया गया है। चौधरी साहब के प्रयत्न कभी निष्फल नहीं होते हैं। 'आर्य लोक वार्ता' को पूरा विश्वास है कि शीघ्र ही सीतापुर के मध्यवर्ती भाग ग्रीकगंज में पुराना आर्य समाज आपना नवीन आकार प्राप्त कर लेगा और सीतापुर की जनता को पहले की तरह लाभान्वित करेगा।

सण्डीला-समाचार

होनहार बालक का सम्मान

लाला गंगा प्रसाद मानव कल्याण समिति, सण्डीला ने नगर के होनहार बालक

आयुष्मान अमन सिंह पुत्र श्री अशोक सिंह को एक बृहद् यज्ञ आयोजित कर सम्मानित किया। अमन ने ९८.७५ प्रतिशत अंक लेकर आई.एस.सी.बोर्ड की इण्टरमीडिएट परीक्षा उत्तीर्ण की है। अमन ने एल.पी.एस.लखनऊ, सण्डीला एवं पूरे जनपद हरदोई का नाम गौरवान्वित किया है। अमन ने कक्षा १० में भी सेन्ट टेरेसा हाई स्कूल से टाप किया था। पूरे हरदोई सम्पूर्ण जनपद की ओर से अग्नि में वेदमंत्रों द्वारा आहुति देकर आयुष्मान अमन के उज्ज्वल भविष्य की कामना की गई। *(डा.सत्यप्रकाश)*

स्व.सरला आर्य परिवार के साथ

यह चित्र श्री अमित त्रिपाठी के जन्मदिन दि.03.08.2020 का है। चित्र में बायें से दायें-रश्मि, अनूषा, आलोक, शशि, निमिषा(खड़े हुए), डॉ.वेद प्रकाश आर्य, श्रीमती सरला आर्य(मध्य), मलयज, अमित(बैठे हुए)

संस्थापक
स्व. स्वामी आत्मबोध सरस्वती

संरक्षक एवं निर्देशक
कर्मयोगी श्री आनन्द कुमार आर्य

प्रधान संपादक
डॉ० वेद प्रकाश आर्य
कार्यालय-638/181डी,
शिवविहार कालोनी, पो.-सीमैप,
पिकनिक स्पाट रोड, लखनऊ-226015
9450500138

संपादक
आलोक वीर आर्य
: 8400038484

प्रसार व्यवस्थापक
अमित वीर त्रिपाठी
: 9651333679

संवाद प्रमुख
गौरीशंकर वैश्य 'विनम्र'
: 9956087585

विशेष कार्याधिकारी
श्रीमती निमिषा वाजपेयी
: 7310119999

प्रचार प्रमुख
श्री प्रेम चन्द शर्मा
: 8799521631

नवोन्मेष
श्री कृष्णा जी

ई-मेल
aryalokvarta@gmail.com

सहयोग राशि

सामान्य सदस्य	-	100 रु वार्षिक
सक्रिय सदस्य	-	200 रु. वार्षिक
विशिष्ट सदस्य	-	500 रु. वार्षिक
होता सदस्य	-	2,000 रु वार्षिक
संरक्षक	-	20,000 रु.
प्रतिष्ठापक	-	75,000 रु.

सहयोग राशि निम्नलिखित बैंक की किसी भी शाखा में 'आर्य्य लोक वार्ता' खाते में जमा कर हमें सूचित कर सकते हैं। विवरण इस प्रकार है-

बैंक-बैंक आफ बड़ौदा, विभव खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ।
IFSC - BARBOVIBHAV
खाता धारक - आर्य लोक वार्ता
खाता सं.-46900 1000 00651
खाते का प्रकार-बचत खाता

प्रतिष्ठापक
श्री अरविन्द कुमार आर्किटेक्ट, लखनऊ
श्री जे.पी.अग्रवाल, कनखल, हरिद्वार

संरक्षक
डॉ.भानु प्रकाश आर्य, लखनऊ
श्रीमती बलबीर कपूर, लखनऊ
श्रीमती मिनी स्वरूप, नई दिल्ली
श्रीमती मधुर भण्डारी, नई दिल्ली
श्रीमती कमलेश पाल, लखनऊ,
कर्नल पाल प्रमोद, मेरठ
आचार्य आनन्द मनीषी, लखनऊ
श्रीमती रामा आर्य 'रमा', लखनऊ
श्री सर्वमित्र शास्त्री, लखनऊ

परामर्श एवं सहयोग
डा. सत्य प्रकाश, सण्डीला, हरदोई

सलाहकार
श्री आनन्द चौधरी एडवोकेट, लखनऊ

मुद्रक, स्वामी और प्रकाशक डॉ. वेद प्रकाश आर्य के लिए क्रियेटिव ग्राफिक्स, बी-2, हिमाशु सदन, 5-पार्क रोड, लखनऊ द्वारा मुद्रित तथा 'वेदाधिष्ठान' 539क/234 हरीनगर, (रवीन्द्रपल्ली) पो.-इन्दिरानगर, लखनऊ से प्रकाशित।